वर्ष 05, अंक 03, 01 अक्टूबर 2025

द वायरल

राष्ट्र को समर्पित

www.theviralpatrika.com

राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ...

40/-

RNI NO. : MPBIL/2021/86583

दीपोत्सव पर्व की
हार्दिक
शुभकामनायें
वायरल
गिरीश चंदानी
समाजसेवी, मण्डला

Hero
आया त्योहार
हीरो पे सवार
वायरल
प्रत्येक गाड़ी
के साथ
स्ट्रोली उपहार
DESTINI 125
DESTINI PRIME
T&C Apply
आज ही बुक करें और सुनिश्चित शुभ मुहूर्त में डिलीवरी पाएं
₹15000* तक का GST लाभ
अतिरिक्त बुकिंग डिस्काउंट ₹1000*
कम ब्याज दर 7.99%*
डाउन पेमेंट ₹7999* से शुरू
डीलर- शुभा हीरो कटरा, मंडला
7389877590, 9131113636, 9926549576

वायरल
Muskan
JEWELLERS
हर दुल्हन की पहली मुस्कान
Muskan Jewellers
8319809316, 9109484541
BEHIND JAI HIND DAIRY, CHILMAN CHOWK, MANDLA

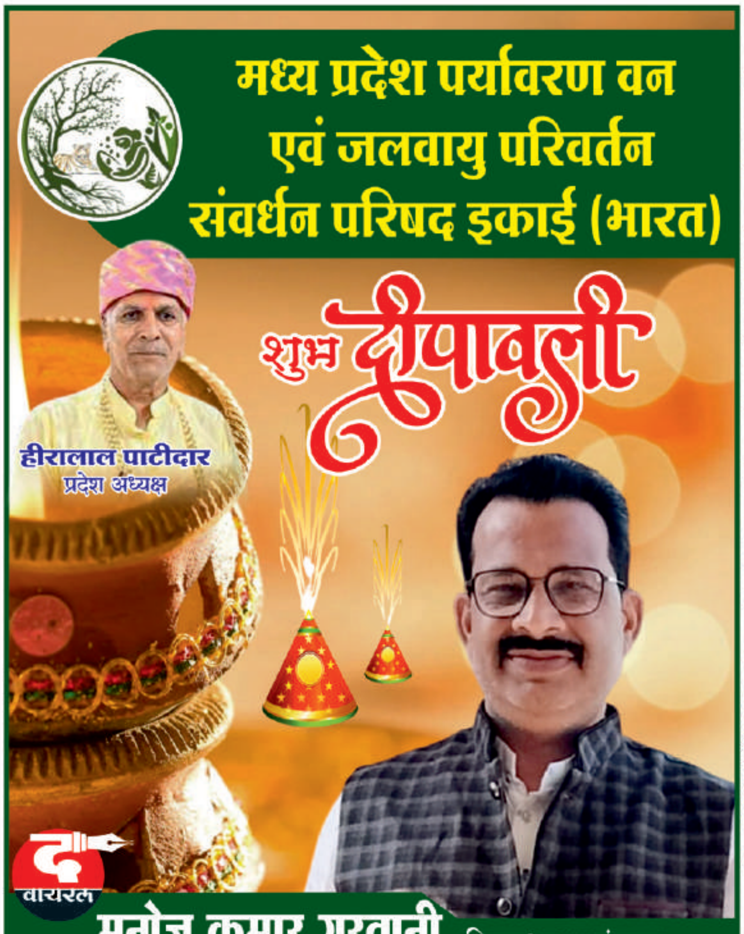

मध्य प्रदेश पर्यावरण वन
एवं जलवायु परिवर्तन
संवर्धन परिषद इकाई (भारत)
शुभ दीपावली
हीरालाल पाटीदार
प्रदेश अध्यक्ष
वायरल
मनोज कुमार गुरवानी
जिलाध्यक्ष मंडला

Diwali

भीतर...

संपादकीय	:	राकेश झा
मध्यप्रदेश	:	कपिल वर्मा
लखनऊ	:	अजयकुमार
उत्तर प्रदेश	:	संजय सक्सेना
बिहार	:	रानी झा
महाराष्ट्र	:	अनुजा दुबे ''पूजा''
भोपाल	:	के.के.जोशी
मण्डला	:	एस.पी. तिवारी
मण्डला	:	अखिलेश अग्रवाल
मण्डला	:	डॉ. शरद नारायण खरे
मण्डला	:	डॉ. संध्या शुक्ल ''मृदुल''
मण्डला	:	डॉ. नवनीता दुबे ''नुपुर''

ग्राफिक्स– महेन्द्र अग्रवाल '' मोनू'' क्रियेटिविटी, मंड्ला

॥ शुभ दीपावली ॥

इस दीपावली आईयें हम सिर्फ घर नहीं, दिल भी रोशन करें। स्वदेशी अपनाना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि अपने देश के प्रति सच्चा सम्मान है जब हम देश में बने हुये दिये जलाते है, हस्त निर्मित वस्तुएँ खरीदते है, तो हम किसी कारीगर का सपना सजाते है।

इस पावन पर्व पर हम संकल्प लें– अपने गांव, अपने कुटीर उद्योग, अपनी मातृभूमि को मजबूत बनाने का

यह दीपावली समस्त प्रदेशवासियों को उत्तम स्वास्थ्य एवं धनधान्य से परिपूर्ण करें, इन्हीं शुभकानाओं के साथ...

सम्पतिया उइके
केबिनेट मंत्री
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग
मध्य प्रदेश

स्वदेशी अपनायें– आत्म निर्भर भारत का दीप जलायें

आपकी सफलता के बढ़ते कदम द वायरल के साथ

द वायरल
राष्ट्र को समर्पित
www.theviralpatrika.com

समस्त पाठकों को धनतेरस एवं दीपावली की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ...

कार्यालय – चेम्बर 21, रेडक्रॉस भवन, मण्डला (म.प्र.) 481 661, फोन नं. 9424917797
e-mail : theviralpatrika@gmail.com

कपिल वर्मा
प्रधान सम्पादक

राकेश झा
सम्पादक

अखिलेश अग्रवाल
विशेष संवाददाता

एस.पी. तिवारी
विशेष संवाददाता

राजेश जोशी
सर्कुलेशन इंचार्ज

महेन्द्र अग्रवाल
ग्राफिक्स

आशीष सेठ
मुद्रक

सम्पादकीय...

सौ वर्षः वसुधैव कुटम्बकम और राष्ट्र प्रथम को समर्पित संघ

द वायरल। आरएसएस अर्थात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, एक ऐसा संगठन जिसकी नींव रखने का आधार ही राष्ट्रप्रेम और राष्ट्र प्रथम है । एक ऐसा संगठन जिसका जन्म कांग्रेस की हिन्दू विरोधी नीतियों और मुस्लिम तुष्टिकरण के विरुध्द हुआ था। फिर , भला कांग्रेस इस संगठन को पसंद कैसे कर सकती थी। आरएसएस का राष्ट्रवादी सिंद्धांत कांग्रेस विशेषकर पंडित नेहरू एवं उनके समर्थकों की आंख में हमेशा खटकता रहा। कांग्रेस के सर्वेसर्वा होने की वजह से नेहरू ने जो चाहा वो किया। जिस किसी ने उनके लिए गए निर्णयों पर आपत्ति जताई वे क्रमशः पार्टी से दरकिनार कर दिए गए। अगली पीढ़ी के कांग्रेसी नेताओं ने इतिहास जाने बिना उसी परिपाटी को आगे बढ़ाया जो पंडित नेहरू तय कर गए थे । आज वर्तमान में कांग्रेस को उन सभी राजनीतिक दलों का साथ मिला हुआ है , जिनको सत्ता की मलाई चाटने का मौका नहीं मिल पा रहा । उनके लिए सत्ता की मलाई पाने का एकमात्र राजनीतिक सहारा कांग्रेस पार्टी है। कांग्रेस का साथ और उसकी हाँ में हाँ मिलना मजबूरी बनी हुई है। वैसे भी विपक्षी दल पिछले ग्यारह वर्षों से केंद्र की भाजपा अगुवाई वाली एनडीए सरकार को भ्रष्टाचार के मुद्दे पर घेर पाने में असमर्थ रहे हैं। यही वजह है , कि केंद्र सरकार पर जो भी आरोप विपक्षी दलों द्वारा लगाए जाते हैं , उसमें भाजपा के साथ – साथ आरएसएस का नाम लेने की राजनीतिक परम्परा सी निर्मित हो गई है। जबकि , राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राजनीतिक संस्था या पार्टी नहीं है। उसका कार्यक्षेत्र और कार्य करने का तरीका गैर – राजनीतिक है । किंतु , राजनीतिक स्वार्थों के चलते विपक्षी दलों द्वारा आरएसएस पर राजनीति से प्रेरित आरोप लगाए जाते रहे हैं । संघ के लोगों ने कभी स्वतंत्रता संग्राम में भाग नहीं लिया । यह हर विपक्षी दल का तकियाकलाम बना हुआ है । लेकिन क्या इन आरोपों को लगाने वाले लोगों ने कभी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में कभी कुछ जानने का प्रयास किया ? भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास बहुआयामी है। इसमें अनगिनत संगठनों , आन्दोलनों , सत्याग्रहों और असंख्य ज्ञात – अज्ञात वीरों का योगदान समाहित है । इस व्यापक परिदृश्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उल्लेख प्रायः विवादों और भ्रांतियों के घेरे में किया जाता रहा है । एक ओर विरोधियों का हमेशा आरोप रहा है , कि संघ ने स्वतंत्रता संग्राम में कोई भूमिका नहीं निभाई , वहीं दूसरी ओर तथ्य यह सिद्ध करते हैं , कि संघ ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया , किन्तु उसका श्रेय नहीं लिया । डॉ केशव बलिराम हेडगेवार का जीवन स्वयं इस सत्य का साक्ष्य है , कि वे 1920 के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रहे । विदेशी वस्त्रों की होली में भाग लिया और जेल गए । 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में नागपुर सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुए पुनः जेल गए । तत्कालीन अखबार द सेंट्रल प्रोविंसेज क्रोनिकल और सरकारी रिकॉर्ड्स में उनकी गिरफ्तारी उल्लेख मिलता है । किंतु , उन्होंने जल्द ही समझ लिया कि केवल आंदोलन मात्र से स्वतंत्रता प्राप्त स्थायी नहीं होगी । कांग्रेस के मुस्लिम समुदाय के प्रति बढ़ते प्रेम और हिंदुओं के प्रति बेरुखी को देखते हुए, 27 सितम्बर 1925 विजयादशमी के दिन उन्होंने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की । संघ की प्रतिज्ञा में स्पष्ट उल्लेख था , कि अपने पवित्र हिन्दु धर्म , हिन्दू संस्कृति , हिन्दू समाज की रक्षा एवं हिन्दू राष्ट्र को स्वतंत्र कराने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घटक बना हूँ । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने स्वतंत्रता संग्राम को किसी आंदोलन से नहीं बल्कि दीर्घकालिक साधना से जोड़ा । डॉ हेडगेवार का मत था , कि कांग्रेस और अन्य संगठन प्रत्यक्ष आंदोलन का कार्य करें , जबकि संघ समाज का संगठन करे। यही कारण था, कि संघ के कार्यकर्ता आंदोलन में व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित हुए, किन्तु सँघ संगठन के रूप में आंदोलन का औपचारिक अंग नहीं बना । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की यही विशेषता रही है , कि कर्तव्य का पालन करो , श्रेय की चिंता मत करो। डॉ हेडगेवार ने स्वयं कहा था – संघ का कार्य राष्ट्र निर्माण है, सत्ता प्राप्त करना नहीं। यही कारण है, कि संघ का योगदान इतिहास में दर्ज नहीं है और इसी का फायदा उठाकर विरोधियों ने यह दुष्प्रचार किया , कि संघ स्वतंत्रता आंदोलन से अलग रहा। संघ का स्वतंत्रता संग्राम में कोई योगदान नहीं है । जबकि , संघ ने 1947 के पश्चात भी समाज निर्माण की दिशा में सतत प्रयास जारी रखा। देश विभाजन के समय लाखों शरणार्थियों की सेवा , 1971 युद्ध मे सैनिक परिवारों को सहयोग , 1975 के आपातकाल में लोकतंत्र की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका संघ की निरंतर साधना के प्रमाण हैं । संघ ने राजनीति में सीधा प्रवेश नहीं किया , बल्कि संगठन और सेवा भाव के माध्यम से राष्ट्र जीवन को मजबूत किया। आज सेवा भारती , वनवासी कल्याण आश्रम , अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद , भारतीय मजदूर संघ जैसे अनेक संगठनों के माध्यम से संघ समाज के विविध क्षेत्रों में सक्रिय है। पिछले दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सौंवा

सिक्का जारी करते हुये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मंच पर उपस्थित अन्य

स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा रुपये सौ का सिक्का और एक डाक टिकट जारी किया गया। सिक्के पर पहली बार भारत माता की तस्वीर देखने में आई । सिक्के में स्वयंसेवकों को भारत माता को प्रणाम करते दिखाया गया है। साथ ही साथ संस्कृत में एक वाक्य लिखा हुआ है। राष्ट्राय स्वाहा , जिसको लेकर विपक्षी दलों के टूलकिट ने सोशल मीडिया पर मजाक बनाना प्रारम्भ कर दिया। कहा जाता है,ना , कि भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस पड़ी बगराये श बस वही हाल इन विपक्षी दलों और संघ विरोधी मानसिकता के लोगों का है । विपक्षियों द्वारा यह स्थापित करने का प्रयास किया जाने लगा कि भाजपा ने संघ प्रेम में राष्ट्र को स्वाहा कर दिया। यदि , इन विपक्षी दलों के नेताओं और उनके समर्थकों ने केवल विरोध की मानसिकता नहीं रखी होती , तो उन्हें यह पता होता , कि हिन्दू रीति रिवाजों में जब हवन किया जाता है , तब आहुति डाली जाती है। देवी – देवताओं के नाम का उच्चारण करते हुए स्वाहा कहते हुए हवन कुंड में आहुति दी जाती है । इसका अर्थ यह नहीं होता कि उन देवी – देवताओं को जलाया जा रहा है। लेकिन , हिंदुओं के प्रति इतनी नफरत इन लोगों के अंदर भरी हुई है , कि ये कभी उन तथ्यों को जानने समझने का प्रयास नहीं करते हैं। बल्कि , आम जनता को गुमराह करते हैं। सिक्के में लिखे वाक्य का मोटा मोटा अर्थ यह निकलता है , कि राष्ट्र को सब समर्पित , मुझे नहीं !! ....कोई माने या ना माने,किन्तु सच्चाई यही है,कि कुछ स्वार्थी लोगों ने देश की जनता से बहुत सी बातें छुपाई थीं. उस समय जानकारी साझा करने के साधन कम हुआ करते थे,वे भी इन स्वार्थी तत्वों के आधीन थे. उन्होंने जो चाहा वही जानकारी जनता तक पहुंचती थी,वो भी उसी रूप में जो वे लोग चाहते थे. आज सोशल मीडिया के चलते बहुत से अनछुए पहलू जनता के सामने आने लगे हैं,तो वे इतने अकल्पनीय हैं,कि सहसा जनता को विश्वास नहीं हो पाता है. जनता के लिए यह बात अविश्वसनीय हो रही है, कि जिन लोगों को वे भगवान की तरह पूजते आये थे,वे इतने कपटी और स्वार्थी भी हो सकते हैं. किसी को जानना हो तो उसके बारे में पढ़िए । सुनी सुनाई बातों पर विश्वास करके आप अपनी शंका का समाधान नहीं पा सकते हैं । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत का अहित करने वाली विचारधारा के लोगों की राह का रोड़ा है , निःसंदेह ऐसे लोगों की आंखों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ खटकेगा ही । किसी को समझने के लिए उसके करीब जाना होता है । संघ की सच्चाई उसके करीब पहुंचे बिना आप नहीं समझ सकते । वसुधैव कुटम्बकम एवं राष्ट्र प्रथम की विचारधारा गलत कैसे हो सकती है , यह आपको स्वयं ही समझना होगा ।

राकेश झा
सम्पादक

समस्त पाठकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ...

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मोदी सरकार की नीति

कपिल वर्मा | द वायरल | मंडला प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत तेजी से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। सरकार का लक्ष्य देश को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना, विदेशी निर्भरता कम करना और स्वदेशी उत्पादन एवं नवाचार के जरिए भारत को वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करना है। इसके लिए स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा देना, कृषि और ग्रामीण विकास पर ध्यान केंद्रित करना, शिक्षा और कौशल विकास को सशक्त करना, स्वच्छ ऊर्जा को अपनाना और पारदर्शी नीतियों को लागू करना प्रमुख स्तंभ बनाए गए हैं। आत्मनिर्भरता की दिशा में सबसे बड़ा कदम Make in India अभियान को सशक्त बनाना है। सरकार देश के उद्योगों को प्रोत्साहन देकर और उत्पादन लागत घटाकर लघु, सूक्ष्म एवं मध्यम उद्यमों (MSME) को मजबूत बना रही है। उद्देश्य है कि अधिकतर उत्पाद देश में ही निर्मित हों और विदेशों पर निर्भरता कम हो। प्रधानमंत्री ने नागरिकों से "लोकल को वोकल बनाओ" का आह्वान किया है। भारत की अर्थव्यवस्था में ग्रामीण क्षेत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। मोदी सरकार किसानों को आधुनिक तकनीक, गुणवत्तापूर्ण बीज और बेहतर बाजार उपलब्ध कराने पर जोर दे रही है। ग्रामीण सड़कों और बुनियादी सुविधाओं के विकास से किसानों को अपनी उपज उचित दाम पर बेचने में मदद मिल रही है। मोदी का स्पष्ट संदेश है "गांव मजबूत होंगे तो देश मजबूत होगा।" आत्मनिर्भर भारत की नींव युवाओं की शिक्षा और कौशल पर टिकी है। सरकार युवाओं को तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा देने, डिजिटल साक्षरता बढ़ाने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएं चला रही है। Skill India Mission, Digital India जैसे अभियानों से युवाओं को आधुनिक उद्योगों में काम करने के लिए तैयार किया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने नागरिकों से स्वदेशी उत्पादों को अपनाने की अपील की है ताकि स्थानीय उद्योगों को बल मिले और अर्थव्यवस्था सशक्त हो। UPI जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्मों के जरिए छोटे कारोबारियों तक उपभोक्ताओं की पहुंच आसान बनाई जा रही है। 'वोकल फॉर लोकल' आंदोलन आत्मनिर्भरता को जनआंदोलन का रूप दे रहा है। तकनीक और नवाचार आत्मनिर्भर भारत की रीढ़ हैं। सरकार अनुसंधान और विकास (R&D) में निवेश बढ़ा रही है। सेमीकंडक्टर, एआई और साइबर सुरक्षा जैसे उच्च–तकनीकी क्षेत्रों में स्वदेशी क्षमता विकसित की जा रही है। Startup India जैसी योजनाएं नवाचार को नई दिशा दे रही हैं। आधारभूत ढांचा किसी भी राष्ट्र के विकास का मूल है। मोदी सरकार ने सड़क, रेलवे, बंदरगाह और ऊर्जा क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर काम शुरू किया है ताकि लॉजिस्टिक्स लागत कम हो और उद्योगों को अनुकूल माहौल मिल सके। PM Gati Shakti National Master Plan जैसी योजनाएं देश को आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर से जोड़ रही हैं। सरकार स्वच्छ ऊर्जा और पर्यावरण संरक्षण को आत्मनिर्भर भारत का महत्वपूर्ण हिस्सा बना रही है। सौर और पवन ऊर्जा में निवेश बढ़ाया जा रहा है और ऊर्जा स्वतंत्रता की दिशा में तेजी से प्रगति हो रही है। मोदी का नारा "हरित भारत– आत्मनिर्भर भारत" ऊर्जा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव का संकेत है। आत्मनिर्भर भारत के लिए पारदर्शी और स्थिर नीतिगत ढांचा आवश्यक है। सरकार औद्योगिक और कारोबारी माहौल को सरल बना रही है, निर्यात–आयात नीतियों में सुधार कर रही है और निवेशकों के लिए भरोसेमंद माहौल तैयार कर रही है। अनावश्यक आयात पर नियंत्रण और स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन इस नीति के केंद्र में हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आत्मनिर्भर भारत अभियान केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक व्यापक राष्ट्रीय रणनीति है। इसका उद्देश्य भारत को आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक रूप से इतना सशक्त बनाना है कि वह वैश्विक अर्थव्यवस्था में नेतृत्वकारी भूमिका निभा सके। यदि हर नागरिक स्वदेशी उत्पाद अपनाए, नवाचार को प्रोत्साहित करे और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत एक सशक्त, आधुनिक और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनकर विश्व के सामने खड़ा होगा।

आत्मनिर्भर भारत!
मजबूत भारत!
आधुनिक भारत!
गौरवशाली भारत!

फग्गनसिंह कुलस्ते
सांसद, मंडला लोकसभा

धनतेरस एवं दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएँ

जयदत्त झा
(एडव्होकेट)
जिला उपाध्यक्ष-भारतीय जनता पार्टी मंडला | सांसद प्रतिनिधि
संयोजक- आत्म निर्भर भारत अभियान, जिला मंडला

गुणवत्ता,संस्कृति और सफलता का प्रतीक सांदिपनि मॉडल विद्यालय निवास

सांदीपनि मॉडल विद्यालय निवास ने वर्ष 2025 में अपनी उपलब्धियों और विविध गतिविधियों के माध्यम से यह साबित कर दिया है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ सांस्कृतिक, खेलकूद और नवाचार को एक साथ कैसे जोड़ा जा सकता है। विद्यालय में 1 अप्रैल 2025 को प्रवेश उत्सव कार्यक्रम बड़े उत्साह और पारंपरिक गरिमा के साथ मनाया गया, जिसमें नए विद्यार्थियों का स्वागत कर उन्हें विद्यालय परिवार में सम्मिलित किया गया। इसी कड़ी में 1 मई से 20 मई तक हुनर समर कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों को विभिन्न कलाओं और कौशलों का प्रशिक्षण दिया गया और उनकी प्रतिभा को निखारने का अवसर प्रदान किया गया। 4 जुलाई को विद्यालय में प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें शैक्षणिक और अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत हर घर तिरंगा कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय में चित्रकला, निबंध लेखन, रंगोली प्रतियोगिता, रैली, मानव श्रृंखला और सेल्फी कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया, जिससे विद्यार्थियों में देशभक्ति और एकता का संदेश पहुंचा। विद्यालय ने खेल के क्षेत्र में भी अपनी मजबूत पहचान बनाई है। तीन विद्यार्थियों का राज्य स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता में चयन हुआ, वहीं दो छात्राओं ने कुराश राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में चयनित होकर विद्यालय का नाम रोशन किया। विधि जैन ने इस प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त कर गौरव बढ़ाया। कक्षा 9वीं के आठ विद्यार्थियों को राष्ट्रीय मीन्स कम मैरिट छात्रवृत्ति प्राप्त हुई, जो विद्यालय की शैक्षणिक उत्कृष्टता का प्रमाण है। साथ ही 81 विद्यार्थियों को निशुल्क साइकिल वितरण कर उनके शिक्षा पथ को सुगम बनाया गया। विद्यार्थियों के कैरियर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के लिए विशेष पहल के तहत एमपीपीएससी परीक्षा में 9वां स्थान प्राप्त कर डीएसपी रैंक हासिल करने वाली छात्रा मोना मिश्रा को सम्मानित किया गया। नवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में विद्यालय में भव्य गरबा कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार के लिए विद्यालय में रिमेडियल और दक्षता कक्षाएं संचालित की जा रही हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए नीट और जेईई की कोचिंग भी विद्यालय द्वारा दी जा रही है। इसी दिशा में 11 अक्टूबर 2025 को व्यवसायिक संकाय के विद्यार्थियों के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत मंगलायतन यूनिवर्सिटी, ज्ञान गंगा यूनिवर्सिटी और माही नर्सिंग होम का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया, जिसमें आईटी और हेल्थ संकाय के लगभग 300 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। सांदीपनि मॉडल विद्यालय निवास में पिछले चार वर्षों से प्रभारी प्राचार्य वेदप्रकाश अवधिया के कुशल मार्गदर्शन में निरंतर प्रगति हो रही है। अभिभावकों का विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ा है और नामांकन में लगातार वृद्धि देखी जा रही है। यही कारण है कि यह विद्यालय क्षेत्र में एक सरकारी स्कूल का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर उभरा है। पूरे मंडला जिले में यह एकमात्र विद्यालय है जहां हिंदी माध्यम के साथ–साथ अंग्रेजी माध्यम में भी कक्षा 6वीं से 12वीं तक की पढ़ाई संचालित की जाती है। नामांकन में हुई प्रगति विद्यालय की लोकप्रियता और सफलता को दर्शाती हैकृसत्र 2021–22 में 380 विद्यार्थी, 2022–23 में 650 विद्यार्थी, 2023–24 में 750 विद्यार्थी, 2024–25 में 850 विद्यार्थी और वर्तमान सत्र 2025–26 में 902 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। वर्तमान में विद्यालय में 18 नियमित शिक्षक, दो व्यावसायिक शिक्षक और 23 अतिथि शिक्षक सेवाएं दे रहे हैं। सांदीपनि मॉडल विद्यालय निवास आज अपने समर्पित शिक्षकों, अनुशासितविद्यार्थियों,सक्रिय अभिभावकों और दूरदर्शी नेतृत्व के कारण मंडला जिले में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का पर्याय बन चुका है। यह विद्यालय न केवल ज्ञान का मंदिर है, बल्कि संस्कार, खेल, संस्कृति और भविष्य निर्माण का सशक्त केंद्र भी है।

शुभ दीपावली

दीपक का संदेश है, अहंकार की हार।
नीति,सत्य अरु धर्म से,पलता है उजियार।।
उजियारे की वंदना,दीपक का संदेश।
कितना भी सामर्थ्य पर,रहे मनुज का वेश।।
मद में भरना मत कभी, करना मत अभिमान।
दीपक करने आ गया, आज तिमिर–अवसान।।
दीपों के संग है सजा, विजयभाव–आवेश।
विनत भाव से जो रहे,परे करे क्लेश।।
निज गरिमा को त्यागकर,बनना नहीं असंत।
वरना असमय ही सदा,हो जाता है अंत।।
पूजा में दीपक जले,जलकर रचता धर्म।
समझ–बूझ लें आप सब,यही पर्व का मर्म।।
कहे दीप की श्रृंखला, सम्मानित हर नार।
नारी के सम्मान से, हो जग में उजियार।।
उजियारा सबने किया,हुई राम की जीत।
आओ हम गरिमा रखें,बनें सत्य के मीत।।
कोशिश करके मारना,अंतर का अँधियार।
भीतर जो अँधियार है,देना उसको मार।।
अहंकार मत पोसना,वरना तय अवसान ।
उजियारे की भावना,लाती है उत्थान।।
दीपों ने मंगल चुना, फैलाया आलोक।
इसीलिए जग से हटा, प्रियवर सारा शोक।।

द वायरल । मण्डला : डॉ. शरद नारायण खरे

वायरल
शुभ दीपावली
राजेश पटेल
समाज सेवी
मण्डला (म.प्र.)

वायरल
धनतेरस एवं दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएँ...
डॉ. मुकेश तिलगाम
एम.बी.बी.एस., एम.डी.
संचालक-
डॉ. तिलगाम हेल्थ केयर प्राईवेट लिमिटेड
मण्डला डायग्नोस्टिक

वायरल
Authorised Dealer of
SWARAJ
Sales | Service | Spares
दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएँ...
SWARAJ 744 FE
SWARAJ
प्रो.- ब्रजेश जसवानी
मेसर्स जी.डी.एण्ड सन्स
जबलपुर रोड, बिंझिया मण्डला (म.प्र.)
मो.- 8989809450, 9407444477, 8319971250

वायरल
दीपोत्सव पर्व की हार्दिक
शुभकामनायें
प्रो.आकाश क्षत्री
मनोकामना मोबाईल
बस स्टेण्ड, मंडला 9303105501
न्यू मनोकामना मोबाईल
रेडक्रॉस मार्केट, मंडला
फायनेंस सुविधा उपलब्ध
कम रेट पर
सभी कम्पनी के
मोबाईल उपलब्ध
0%
INTEREST
BAJAJ FINSERV
FINANCE AVAILABLE

शरद ऋतु और त्यौहार

रानी झा | द वायरल | बिहार

संस्कारों की उल्लास भरी पाठशाला होते है त्यौहार । यह न केवल बचपन से ही आत्मिक–आध्यात्मिक उन्नयन का बीज बोते हैं, बल्कि अपने व्यापक रूप में परिवार बोध और सामाजिक समरसता का पाठ भी पढ़ाते हैं। पर्व का अर्थ होता है उत्सव, और जब इसमें सभी सम्मिलित होते हैं तब यह त्यौहार बनता है । सूर्योदय से पूर्व अरुण अपनी लालिमा के जरिए आगमन का संदेश देता है, वैसे ही शरद के आने का संदेश देने के लिए खंजन उपवन में विचर रहे हैं । वन – बाग वाटिका में पक्षियों का मधुर कलरव ऐसे गूंज रहा मानो ऋषिगण मंत्र का जाप कर रहे हों। पारिजात फूल धरती का अभिषेक कर रहे हैं खेतों में फसल तैयार है। पके हुए धान की स्वर्ण जटित बलियों से अपने कोमल शरीर का सिंगार किए, मोरपंखी वस्त्र पहने, हंसों के सुस्वर में उल्लास के गीत गाने वाली खिले हुए कमल के समान सुन्दर मुखवाली शरद ऋतु नवोढ़ा की तरह आ गई है। कार्तिक संधिकाल प्राणियों का मन मोहने वाला है....! पुराने दिनों की मीठी यादें भी ताजा हो जाती हैं। पहले के दशक में गांव – कस्बों में दिपावली का पर्व एकदम अलग ही ढंग से मनाया जाता था। शाम होते ही पूरे मोहल्ले के बच्चे बूढ़े तैयार होकर अपने घर के छतों पर, या बरामदे में इकट्ठा हो जातें थे। औरतें पूजा की तैयारी में लगती। बच्चे सबसे ज्यादा उत्साहित रहते। कोई नारियल और फूल लाता तो कोई तोरण बनाने में खुद को साबित करता, फिर उन्हें पटाखे भी तो फोड़ने होते। तब बिजली के बल्ब नहीं होते थे, मिट्टी के दीयों से पूरा घर, मोहल्ला जगमगा उठता था और प्रसाद ने सबको खीर खूब भाता! खास बात यह थी कि उस समय न तो भव्य लाइटिंग होती थी ना आर्टिफिशियल सजावट, फिर भी श्रद्धा से और सब के साथ मिलकर जो उत्सव मनानें का आनन्द था, वह हर किसी के दिलों में बस जाता। मोहल्ले का हर बच्चा, हर घर वाले खुद को इस उत्सव का हिस्सा मानते। आज भले ही समय बदल गया हो, लेकिन पर्व की वो सादगी और अपनापन आज भी याद आते ही मन को भक्ति और उत्साह से भर देता है।

रक्षा मंत्री ने कैनबरा में ऑस्ट्रेलिया की विदेश मंत्री पेनी वॉन्ग के साथ द्विपक्षीय बैठक की

रक्षा मंत्री ने ऑस्ट्रेलिया के युद्ध स्मारक पर शहीद सैनिकों की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

द वायरल | नई दिल्ली कैनबरा में राजनाथ सिंह ने ऑस्ट्रेलिया की विदेश मंत्री पेनी वॉन्ग के साथ द्विपक्षीय बैठक की। दोनों नेताओं ने भारत–ऑस्ट्रेलिया व्यापक रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के साथ ही रक्षा, सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता में सहयोग बढ़ाने को लेकर अपनी प्रतिबद्धता जताई। राजनाथ सिंह ने भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बढ़ते संबंधों को रेखांकित किया, जो लेन–देन संबंधी हितों के बजाय आपसी विश्वास और साझा लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। पेनी वॉन्ग ने ऑस्ट्रेलियाई समाज में जीवंत भारतीय प्रवासियों के महत्वपूर्ण योगदान की प्रशंसा की और इस बात पर जोर दिया कि दोनों राष्ट्र भले ही भौगोलिक रूप से दूर हैं, लेकिन उनके दृष्टिकोण और मान्यताएं आपस में निकटता से जुड़ी हुई हैं। कैनबरा में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के युद्ध स्मारक पर शहीद सैनिकों की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि भी दी। उन्होंने गर्व के साथ उन भारतीय सैनिकों को याद किया जिन्होंने दूरदराज के देशों में अपने ऑस्ट्रेलियाई साथियों के साथ बहादुरी से लड़ाई लड़ी। यह दोनों देशों के सशस्त्र बलों के बीच स्थायी सौहार्द और साझा बलिदान का प्रतीक है। इससे पहले कैनबरा में ऑस्ट्रेलियाई संसद में उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। संसद के स्पीकर मिल्टन डिक ने विशिष्ट अतिथि के रूप में राजनाथ सिंह का अभिनंदन किया। एंथनी अल्बनीज सहित कई ऑस्ट्रेलियाई संसद सदस्यों ने रक्षा मंत्री को बधाई दी और अभिवादन किया। यह दृश्य भारत–ऑस्ट्रेलिया द्विपक्षीय साझेदारी के उत्साह और मजबूती को दर्शाता है।

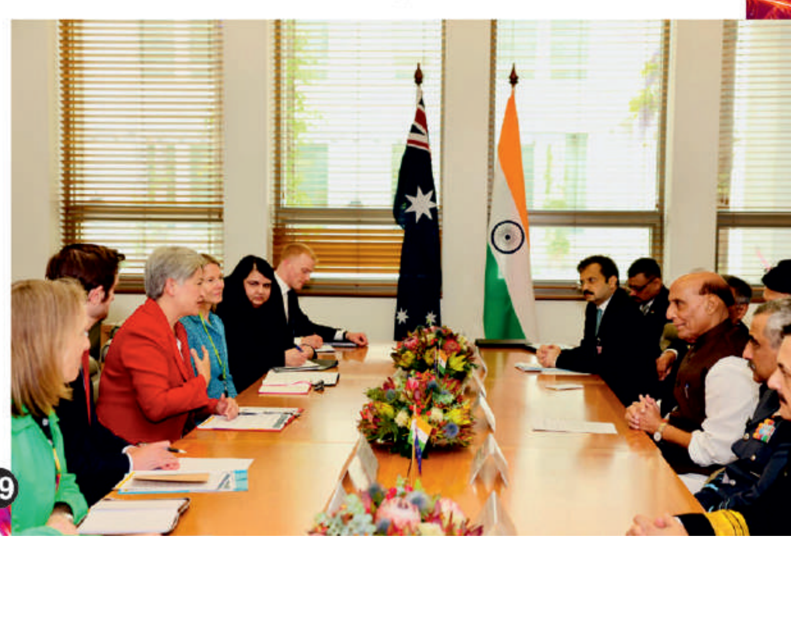

निवास के औद्योगिक विकास को लगेंगे पंख, गुंदलई बनेगा उद्योग का नया केन्द्र

राजस्व विभाग से 33.60 हेक्टेयर जमीन का हस्तांतरण, अधिपत्य के लिए प्रक्रिया शुरू

कपिल वर्मा | द वायरल | मंडला

मंडला जिले के निवास तहसील के औद्योगिक विकास को एक नया आयाम मिलने जा रहा है। मनेरी के बाद अब गुंदलई गांव में एक और औद्योगिक क्षेत्र विकसित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए हैं। औद्योगिक विकास विभाग को यहां 33.60 हेक्टेयर जमीन राजस्व विभाग से हस्तांतरित की गई है। अब इस जमीन पर आधिपत्य प्राप्त करने की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है। औपचारिक रूप से आधिपत्य मिलने के बाद भूमि का औद्योगिक उपयोग के लिए विकास किया जाएगा और इसके बाद प्लॉटों का आवंटन किया जाएगा। निवास से लगभग 10 किलोमीटर दूर स्थित गुंदलई को औद्योगिक दृष्टि से विकसित करने की तैयारी शुरू हो चुकी है। राजस्व विभाग द्वारा जमीन का सीमांकन और नक्शा तैयार किए जाने के बाद इसे उद्योग विभाग को सौंपा जाएगा। इसके बाद मध्यप्रदेश औद्योगिक केंद्र विकास निगम को यह भूमि हस्तांतरित की जाएगी। निगम द्वारा यहां प्लॉटों का विकास कर उद्योग इकाइयों को उपलब्ध कराया जाएगा। यहां छोटे, मध्यम और बड़े पैमाने पर औद्योगिक इकाइयों के स्थापित होने की संभावना जताई जा रही है। इस कदम से न केवल औद्योगिक गतिविधियों में तेजी आएगी बल्कि क्षेत्र का समग्र आर्थिक विकास भी होगा। निवास क्षेत्र लंबे समय से सिंचित भूमि के अभाव और कृषि की सीमाओं के कारण आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है। बड़ी संख्या में ग्रामीण रोजगार की तलाश में अन्य जिलों और राज्यों की ओर पलायन करते हैं। मनेरी को औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित करने के बाद भी स्थिति में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आ पाया था। लेकिन अब गुंदलई में नए औद्योगिक केंद्र की स्थापना से रोजगार के अवसरों में व्यापक वृद्धि की उम्मीद है। यहां स्थानीय युवाओं को उद्योगों में काम करने के अवसर मिलेंगे, जिससे पलायन की समस्या में काफी कमी आ सकती है। साथ ही क्षेत्र में सहायक सेवाओंकृ परिवहन, व्यापार, निर्माण और अन्य सेक्टरों में भी रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। वर्ष 2025 को प्रदेश में 'उद्योग एवं रोजगार वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। इस वर्ष के दौरान प्रदेश सरकार द्वारा कई नीतिगत और प्रायोगिक कदम उठाए जा रहे हैं। संभाग स्तर पर रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का आयोजन, भोपाल में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट और जिला स्तर पर निवेश आकर्षित करने के लिए विशेष कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इन प्रयासों से जिला स्तर पर औद्योगिक निवेश के लिए नए द्वार खुले हैं। मंडला में मोहानिया पटपरा औद्योगिक क्षेत्र के विकास के साथ अब गुंदलई को भी औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित करने से क्षेत्र के औद्योगिक मानचित्र में बड़ा बदलाव आने की संभावना है। राजस्व विभाग द्वारा भूमि का सीमांकन और नक्शा तैयार करने का कार्य शुरू किया जा चुका है। जैसे ही भूमि का आधिपत्य उद्योग विभाग को मिलेगा, एकेवीएन इसे औद्योगिक उपयोग के लिए विकसित करेगा। इसके बाद प्लॉटों का आवंटन कर औद्योगिक इकाइयों को स्थापित करने की प्रक्रिया प्रारंभ की जाएगी। इस पूरी प्रक्रिया में जिला प्रशासन और उद्योग विभाग के बीच समन्वय बनाया गया है। महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग एन.के. वास्कले ने बताया कि गुंदलई में औद्योगिक इकाइयां स्थापित करने के लिए विभाग को 33.60 हेक्टेयर जमीन हस्तांतरित हो चुकी है। अब आधिपत्य प्राप्त करने की प्रक्रिया जिला प्रशासन द्वारा की जा रही है। यह कदम निवास क्षेत्र के औद्योगिक और आर्थिक विकास के लिए मील का पत्थर साबित होगा। निवास क्षेत्र में गुंदलई को औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित करने की योजना न केवल मंडला जिले बल्कि पूरे संभाग के लिए आर्थिक विकास की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हो सकती है। इस कदम से क्षेत्र का भविष्य और अधिक उज्जवल दिख रहा है।

॥ दीप पर्व दोहा ॥

शुभ दीपावली

दीपपर्व सनातन की, सच्ची पहचान।
लंका जीती राम ने, मिला सत्य को मान॥
पापी रावण मारकर, किया अहम का नाश।
घोर तमस पराजित हुआ, फैला सत्य प्रकाश॥
श्रीराम मय हुआ जगत, हुई सत्य की जीत।
दुष्ट दलन फिर हो गया, भक्त नहीं भयभीत॥
पापमुक्त वो ही हुआ, जपे राम का नाम।
लंका दहन रावण वध, किया नीतिगत काम॥
कौशल्या सुत राम ने, रख मर्यादा लाज।
नाशित किया अधर्म को, किए सनातन काज॥
दीप प्रकाशित प्रेम का, उजला मन का द्वार।
अन्तस का तम मिट गया, उजला हो संसार॥
दया मनुजता धर्म है, मानवता की शान।
मर्यादा के पुरुष थे, सनातन की पहचान॥
अहंकार न रखिए, मन में श्रीमन तात।
दंभी का अंत हुआ, समझे यह भी बात॥
संस्कार जीवंत रखो, कर लो सदकाम।
अहंकार का अंत कर, अमर हुए श्रीराम॥

द वायरल | मण्डला : डॉ. नवनीता दुबे 'नूपुर'

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण का नया अध्याय लिख रहा है मध्यप्रदेश

के.के.जोशी | द वायरल | भोपाल

मध्यप्रदेश देश के हृदय स्थल में बसा एक ऐसा राज्य है जिसने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में आज पूरे देश में नई मिसाल कायम कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार ने स्व–सहायता समूहों को महिला सशक्तिकरण का एक सशक्त माध्यम बनाया है। स्व–सहायता समूह न केवल ग्रामीण और शहरी महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना रहे हैं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी उनकी स्थिति को सुदृढ़ कर रहे हैं। पिछले कुछ समय में मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण की दिशा में मध्यप्रदेश ने कई उपलब्धियों को हासिल किया है। सरकार की अनेक नीतियां और योजनाएं महिलाओं के उत्थान में सहायक सिद्ध हो रही हैं। मध्यप्रदेश में स्व–सहायता समूहों को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जा रहा है। वर्तमान में, राज्य में 5 लाख से अधिक स्व–सहायता समूह सक्रिय हैं, जिनमें लगभग 62 लाख महिलाएं जुड़ी हैं। ये समूह महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, कौशल विकास, और सामुदायिक नेतृत्व के अवसर प्रदान कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मानना है कि स्व–सहायता समूह न केवल आर्थिक सशक्तिकरण का साधन हैं, बल्कि सामाजिक बदलाव का भी एक जन–आंदोलन है। मध्यप्रदेश सरकार ने स्व–सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के लिए कई महत्वाकांक्षी योजनाएं शुरू की हैं जिनका प्रभाव राज्य के हर कोने में महसूस किया जा सकता है। मुख्यमंत्री उद्यम शक्ति योजना ने हजारों महिला समूहों को कम ब्याज पर ऋण दिलाकर उनके छोटे–छोटे व्यवसायों को सहारा दिया है। अब महिलाएं न सिर्फ घर चला रही हैं, बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे रही हैं। अब तक 30 हजार 264 महिला समूहों और 12 हजार 685 महिला उद्यमियों को 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान के रूप में 648.67 लाख की राशि वितरित की जा चुकी है। लाड़ली बहना योजना के तहत हर महीने 1.27 करोड़ बहनों के खाते में 1551.86 करोड़ रूपये की आर्थिक सहायता उनके खातों में पहुंच रही है। इससे न केवल आर्थिक रूप से महिलाओं की स्थिति बेहतर हो रही है बल्कि महिलाएं डिजिटल युग की सहभागी भी बन रही हैं। इस योजना में 1. 27 करोड़ महिलाओं को अब तक 35,329 करोड़ रुपये से अधिक की राशि प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त, 25 लाख महिलाओं को 450 रुपये में गैस सिलेंडर रीफिलिंग के लिए 882 करोड़ रुपये से अधिक की सहायता दी गई है। मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना में वर्ष 2024–25 में 2 लाख 73 हजार 605 बालिकाओं का पंजीकरण हुआ और लगभग 223 करोड़ रूपये से अधिक की छात्रवृत्ति यूनि–पे के जरिए वितरित की गई। अब तक कुल 50 लाख 41 हजार 810 बेटियां इस योजना का हिस्सा हैं। राज्य सरकार द्वारा नारी शक्ति मिशन के तहत जिला, परियोजना और ग्राम स्तर पर 100 दिवसीय जागरूकता "हम होंगे कामयाब अभियान" चलाया गया। इसमें प्रदेश में जेंडर संवादों, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, सायबर सुरक्षा, कार्यस्थल पर उत्पीड़न और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों की महिलाओं को न केवल जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के लिए खड़ा होना भी सिखाया गया। मध्यप्रदेश सरकार ने स्व–सहायता समूहों के माध्यम से 1 लाख से अधिक महिलाओं को "लखपति दीदी" बनाया है। यह पहल ग्रामीण महिलाओं को उद्यमिता और आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में प्रेरित कर रही है। मध्यप्रदेश में 850 से अधिक एमएसएमई इकाइयों को 275 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की गई है, जिससे महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन मिला है। इसके अलावा, रेडीमेड गारमेंट उद्योग में कार्यरत महिलाओं को प्रति माह 5,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जा रही है, जिससे उनकी मासिक आय में बढ़ोत्तरी हो रही है। राज्य सरकार ने नारी सुरक्षा को अपनी प्राथमिकता में रखा है। पुलिस बल में महिलाओं की संख्या बढ़ाई गई है और महिलाओं के खिलाफ अपराधों के मामले में सख्त सजा का प्रावधान किया गया है। "महिला हेल्पलाइन" और "महिला पुलिस स्टेशन" जैसी सेवाओं को भी मजबूत किया गया है। महिला हेल्पलाइन 181 और चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 को अब 112 आपात सेवा से जोड़ा गया है। वर्ष 2024–25 में लगभग 82 हजार 552 महिलाओं को त्वरित सहायता मिली है। योजना के प्रारंभ से अब तक एक लाख 57 हजार महिलाओं को लाभ मिल चुका है। यह मिशन प्रदेश में लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर की 300वीं जयंती के अवसर पर शुरू किया गया। इस मिशन के तहत स्व–सहायता समूहों को स्टार्ट–अप अभियान से जोड़ा गया, जिसमें 8 करोड़ 10 लाख रुपये के निवेश पत्र वितरित किए गए। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में राज्य में महिलाओं के लिए न केवल सशक्तिकरण के अवसर पैदा किए गए हैं, बल्कि अब महिलाएं पारंपरिक घरेलू कार्यों से बाहर निकलकर विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। सैनिटेशन और हाइजीन योजना के तहत प्रदेश की 19 लाख से अधिक बालिकाओं को 57 करोड़ 18 लाख रुपये की सहायता प्रदान की गई है जिससे किशोरियों के स्वास्थ्य और स्वच्छता को बढ़ावा मिला है। यूनिसेफ ने भी मध्यप्रदेश के इन प्रयासों की सराहना की है। स्व–सहायता समूहों के माध्यम से मध्यप्रदेश में महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इन समूहों ने न केवल महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की है, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया है। उदाहरण के लिए, स्व–सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं अब स्थानीय स्तर पर उत्पादक संगठनों के माध्यम से रोजगार और स्वरोजगार के अवसर सृजित कर रही हैं। महिलाओं के लिए 35ः सरकारी नौकरियों में आरक्षण और निकाय चुनावों में 50% आरक्षण जैसे कदमों ने उनकी भागीदारी को और बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त, जेंडर बजट में 19,021 करोड़ रुपये की वृद्धि और महिला सशक्तिकरण के लिए 1 लाख 21 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान इस दिशा में सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर के जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेते हुए महिला सशक्तिकरण को नया आयाम दिया है। अहिल्या बाई ने महेश्वर से शासन चलाते हुए महिलाओं को साड़ी बुनाई जैसे कौशलों से जोड़ा, जिससे महेश्वरी साड़ियां विश्व प्रसिद्ध हुईं। यह प्रयास मध्यप्रदेश को नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जिससे कृषि, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा और राजनीति जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता बढ़ रही है। उनका मानना है कि यदि नारी सशक्त होगी, तो समाज और प्रदेश स्वतः सशक्त होगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश स्व–सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का एक नया अध्याय लिखा जा रहा है। एक तरफ आज जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं स्व–सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं वहीं लाड़ली बहना योजना, लखपति दीदी योजना और नारी शक्ति मिशन जैसी अनेकों महिला केन्द्रित योजनाओं के माध्यम से मध्यप्रदेश की महिलाएं आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त हो रही हैं। स्व–सहायता समूहों ने न केवल प्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया है, बल्कि महिलाओं को समाज में सम्मान और स्वावलंबन की नई पहचान दी है।

–लेखक जनसंपर्क विभाग में उप संचालक है

वायरल
।। जय माँ लक्ष्मी।।
।। श्री गणेशाय नमः।।
।। शुभ दीपावली ।।
फग्गनसिंह कुलस्ते
श्रीमति सम्पतिया उइके
प्रफुल्ल मिश्रा
जयदत्त झा
सांसद प्रतिनिधि
विनय मिश्रा
सुशील मिश्रा
वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता

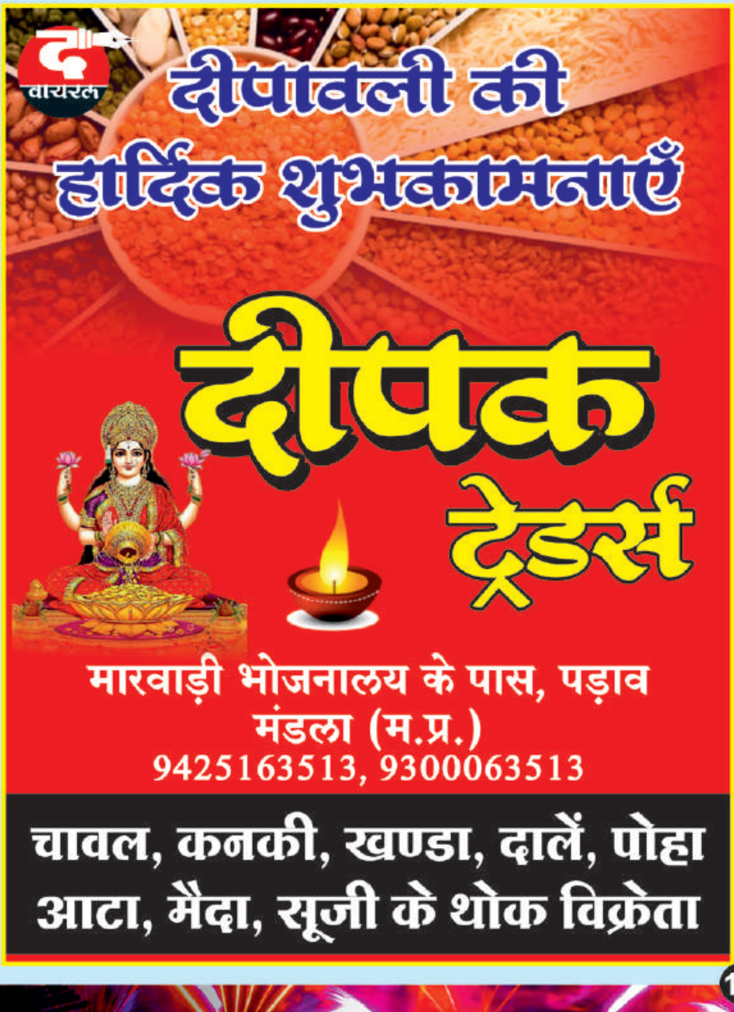

शुभ दीपावली

दुख पीड़ा शत्रुता भुलाकर
अन्तस का अंधियार मिटाकर
कुछ साहस का तेल डालकर
बुझी जा रही लौ को बचाए
आओ मिलकर दीप जलाएं।
खुशियां और आनंद मनाएं।।

नहीं हार के बैठो ऐसे
पग पग पर बाधाएं जैसे
सोचो लक्ष्य को पाएं कैसे
नई आशाओं की बाती ले,
आओ मिलकर दीप जलाएं।
खुशियां और आनंद मनाएं।।

कुछ शहीद हो भू पे पड़े हैं
कुछ जवान सीमा पे अड़े हैं
लिए तिरंगा हाथ खड़े हैं
एक दिया उनके भी नाम का,
आओ मिलकर दीप जलाएं।
खुशियां और आनंद मनाएं।।

हर घर जलता दीप जहाँ हो
बिछी रोशनी जहाँ–तहाँ हों
सुख समृद्धि सौहार्द वहाँ हो
करते हुए हम यही प्रार्थना,
आओ मिलकर दीप जलाएं।
खुशियाँ और आनंद मनाएं।।

दूर गरीबी हो हर घर से
हर आँगन में खुशियाँ बरसे
निराशाएं मिट जायें मन से
कुछ ऐसी उम्मीदों के संग
'पूजा' दीपावली मनाएं।
स्वयं से स्वयं के भाग जगाएं !!!

द वायरल । वरूड महाराष्ट्र : अनुजा दुबे ''पूजा''

रायबरेली से सुप्रीम कोर्ट तक, कांग्रेस ने दलित उत्पीड़न को बनाया बड़ा चुनावी मुद्दा

अजयकुमार | द वायरल | लखनऊ (उ.प्र.)

बिहार के चुनावी मौसम में इस बार हवा कुछ अलग बह रही है। जहां एक तरफ विकास, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं की बातें जोर पकड़ रही हैं, वहीं रायबरेली में दलित युवक हरिओम वाल्मीकि की पीट–पीटकर हत्या और सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बीआर गवई पर जूता उछालने की घटना अब बिहार विधानसभा चुनाव का बड़ा मुद्दा बनने जा रही हैं। कांग्रेस पार्टी इन घटनाओं को हाथों–हाथ लेकर दलित और पिछड़े वर्ग के वोटरों को साधने की पूरी तैयारी में जुट गई है। पार्टी के नेता कहते हैं कि ये सिर्फ दो घटनाएं नहीं, बल्कि भाजपा शासित राज्यों में दलितों पर हो रहे अत्याचारों का जीता–जागता सबूत हैं। सबसे पहले बात करते हैं रायबरेली की उस दर्दनाक घटना की, जो पूरे देश को झकझोर रही है। 2 अक्टूबर 2025 को रायबरेली के ऊंचाहार इलाके में 38 साल के दलित युवक हरिओम वाल्मीकि को गांव वालों ने चोरी के शक में इतनी बेरहमी से पीटा कि उसकी जान चली गई। हरिओम अपनी ससुराल ईश्वरदासपुर आया था, लेकिन गांव वालों ने उसे ड्रोन चोर समझ लिया। दो घंटे तक लाठी–डंडों, बेल्ट और लात–घूंसों से पिटाई होती रही। हरिओम कराहते हुए बार–बार "राहुल गांधी–राहुल गांधी" का नाम ले रहा था, मानो मदद की गुहार लगा रहा हो। हैरानी की बात यह है कि पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन हरिओम को अस्पताल ले जाने की बजाय गांव वालों के हवाले छोड़ दिया। हरिओम की पत्नी का कहना है कि पुलिस ने उसे मरने के लिए छोड़ दिया। किसी ने इस पूरी घटना के तीन वीडियो बना लिए, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो चुके हैं। वीडियो में हरिओम की चीखें और उसकी आखिरी सांसें साफ सुनाई दे रही हैं, जो किसी भी इंसान का कलेजा चीर सकती हैं। पुलिस ने इस मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया है, लेकिन परिवार का आरोप है कि असली दोषी अब भी आजाद घूम रहे हैं। हरिओम के पिता गंगादीन ने बताया कि उनका बेटा मजदूरी करता था और परिवार की कमर टूट गई है। इस घटना ने एक बार फिर मॉब लिंचिंग के पुराने घावों को कुरेद दिया है, जहां दलित और कमजोर वर्ग के लोग आसानी से निशाना बन जाते हैं। कांग्रेस ने इसे समाज पर कलंक बताया और भाजपा सरकार पर सवाल उठाए कि क्या यूपी में जंगलराज चल रहा है? वीडियो वायरल होने के बाद विपक्षी नेता राहुल गांधी ने तुरंत हरिओम के परिवार से फोन पर बात की। उन्होंने परिवार को न्याय का भरोसा दिलाया और अपने एक्स हैंडल पर एक भावुक पोस्ट शेयर किया। राहुल ने लिखा, रायबरेली में दलित युवक हरिओम वाल्मीकि की निर्मम हत्या सिर्फ एक इंसान की नहीं– इंसानियत, संविधान और न्याय की हत्या है। मैं हरिओम के परिवार के साथ खड़ा हूं– उन्हें न्याय जरूर मिलेगा। भारत का भविष्य समानता और मानवता पर टिका है और यह देश चलेगा संविधान से, भीड़ की सनक से नहीं। राहुल की यह पोस्ट लाखों लोगों तक पहुंच चुकी है और दलित समुदाय में काफी सराही जा रही है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, जो खुद दलित समुदाय से हैं, ने भी इस घटना की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि मॉब लिंचिंग और बुलडोजर अन्याय आज की भयावह हकीकत बन गए हैं। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने पीड़ित परिवार से मिलकर सरकार से नौकरी और मुआवजे की मांग की। कांग्रेस सांसद तनुज पुनिया और राजेंद्र गौतम जैसे नेता भी परिवार से मिले और बोले कि भाजपा में दलितों का उत्पीड़न हो रहा है। यह घटना फतेहपुर के दलित समाज में आक्रोश पैदा कर रही है, जहां हरिओम को राहुल का नाम लेने पर और पीटा गया। इस घटना के ठीक बाद, 6 अक्टूबर 2025 को सुप्रीम कोर्ट में एक और चौंकाने वाली वारदात हुई। चीफ जस्टिस बीआर गवई, जो खुद दलित समुदाय से आते हैं, पर 71 साल के वकील राकेश किशोर ने जूता उछाल दिया। राकेश बरेली का रहने वाला है और खुद को सनातन धर्म का रक्षक बताता है। वह कहता है कि सीजेआई की एक पुरानी टिप्पणी से आहत था। दरअसल, 16 सितंबर को एक याचिका पर सुनवाई के दौरान जस्टिस गवई ने मध्य प्रदेश के खजुराहो मंदिर में भगवान विष्णु की सिर कटी मूर्ति को लेकर याचिकाकर्ता से मजाक में कहा था कि मूर्ति से प्रार्थना करो, शायद वह अपना सिर वापस लगा ले। राकेश ने इसे सनातन धर्म का अपमान माना और कोर्ट में ही जूता फेंक दिया। हालांकि, सुरक्षाकर्मियों ने उसे तुरंत पकड़ लिया। राकेश ने बाद में कहा, मुझे कोई अफसोस नहीं, ये सब ऊपर वाले ने कराया। मैं सनातन का अपमान सहन नहीं कर सकता। हैरानी की बात यह है कि राकेश पर कोई केस दर्ज नहीं हुआ। चीफ जस्टिस गवई ने खुद इसे अनदेखा करने को कहा और बोले, इसे अनदेखा कर दीजिए, मैं इससे विचलित नहीं होने वाला। लेकिन सोशल मीडिया पर इस घटना ने तूफान मचा दिया। सोनिया गांधी ने भी निंदा की। विपक्षी नेता जैसे अखिलेश यादव और संजय राउत ने इसे भाजपा की साजिश बताया और कहा कि यह संविधान पर हमला है। राकेश का बयान कि दूसरे समुदाय के जज सनातन का मजाक उड़ाते हैं ने दलित समाज को और भड़का दिया है। अब सवाल यह है कि ये दोनों घटनाएं बिहार चुनाव में कैसे मुद्दा बन रही हैं? बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की घोषणा हो चुकी है। दो चरणों में वोटिंग होगी 6 नवंबर और 11 नवंबर को, जबकि नतीजे 14 नवंबर को आएंगे। यहां दलित वोटरों की संख्या करीब 16–19 प्रतिशत है, जो चुनावी नतीजों को पलट सकती है। कांग्रेस पार्टी इन घटनाओं को अपनी रणनीति का हिस्सा बना रही है। पार्टी की थीम है– दलित गरीब हो या सीजेआई, भाजपा राज में ये निशाने पर, संविधान–लोकतंत्र खतरे में। कांग्रेस ने बिहार में अपना प्रदेश अध्यक्ष दलित समुदाय से आने वाले राजेश राम को बनाया है, जो काफी पहले से तैयारी का हिस्सा है। राहुल गांधी हर सभा में दलित मुद्दों को उठा रहे हैं। वह संविधान पर हमले, आरक्षण और जाति जनगणना की बात करते हैं। हाल ही में उन्होंने नालंदा और गया में अत्यंत पिछड़ा वर्ग सम्मेलन किया, जहां सीएम नीतीश कुमार को चुनौती दी। कांग्रेस महागठबंधन में 55 सीटों पर लड़ने की तैयारी में है, जहां राजद के साथ सीट बंटारे पर मुहर लग चुकी है। पार्टी सीमांचल इलाके पर फोकस कर रही है, जहां मुस्लिम और दलित वोटर ज्यादा हैं। कांग्रेस का दावा है कि यह गरीब–दलितों के वोट चुराने की साजिश है। विपक्षी पार्टियां जैसे राजद और सीपीआईएमएल भी दलितों पर फोकस कर रही हैं। सीपीआईएमएल के दीपांकर भट्टाचार्य कहते हैं कि बिहार में दलित बस्तियों में आग लगाकर बेदखली हो रही है, मजदूरों के हाथ काटे जा रहे हैं। पिछले 20 साल की सरकार में बेरोजगारी और पलायन चरम पर है। प्रशांत किशोर की जनसुराज पार्टी भी नए विकल्प के रूप में उभर रही है, लेकिन राहुल और तेजस्वी का भरोसा दलितों को अपनी ओर खींच रहा है।ये मुद्दे चुनाव को नया मोड़ दे सकते हैं। जहां भाजपा विकास और मोदी–योगी की छवि पर जोर दे रही है, वहीं कांग्रेस दलितों की भावनाओं को भुनाने की कोशिश में है। रायबरेली और सीजेआई घटना ने दलितों में गुस्सा भरा है, जो बिहार में वोट बन सकता है। अंत में, सवाल यही है– क्या संविधान और न्याय की लड़ाई चुनावी जीत दिलाएगी या विकास की बातें हावी रहेंगी? बिहार के मतदाता ही फैसला करेंगे।

'महासंकल्प रैली' से मायावती की वापसी की पटकथा तैयार, 2027 की जंग का शंखनाद

संजय सक्सेना | द वायरल | लखनऊ (उ.प्र.)

उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक बार फिर मायावती की वापसी की दस्तक सुनाई दे रही है। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की सुप्रीमो मायावती 9 अक्टूबर को लखनऊ के 'मान्यवर कांशीराम स्मारक स्थल' पर विशाल 'महासंकल्प रैली' के जरिए अपनी राजनीतिक ताकत का जोरदार प्रदर्शन करने जा रही हैं। यह रैली न केवल बसपा के संस्थापक कांशीराम को श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर है, बल्कि मायावती द्वारा पार्टी को दोबारा पटरी पर लाने और 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारी का बिगुल फूंकने का भी मंच बन गई है। को लेकर बसपा संगठन के तमाम बड़े चेहरे, जैसे आकाश आनंद, दिनेश चंद्र, घनश्याम चंद्र खरवार, नौशाद अली, विश्वनाथ पाल, भीम राजभर, गयाचरण दिनकर, शमशुद्दीन राइनी समेत जिला, मंडल और सेक्टर स्तर तक के कार्यकर्ता सक्रिय हैं। पार्टी ने रैली में 5 लाख से अधिक लोगों को जुटाने का दावा किया है। अगर यह संख्या पूरी होती है, तो यह मायावती के लिए न केवल मनोबल बढ़ाने वाला क्षण होगा, बल्कि 2007 जैसे राजनीतिक प्रभाव की पुनरावृत्ति भी हो सकती है यह रैली इसलिए भी ऐतिहासिक मानी जा रही है क्योंकि 9 अक्टूबर कांशीराम की पुण्यतिथि है। कांशीराम, जिन्होंने बहुजन आंदोलन को एक नई दिशा दी थी, उनके विचारों को जमीन पर उतारने वाली नेता के तौर पर मायावती खुद को प्रस्तुत करती रही हैं। ऐसे में यह आयोजन कांशीराम को श्रद्धांजलि देने से कहीं आगे बढ़कर, बसपा के 'राजनीतिक पुनर्जीवन' का रोडमैप भी पेश करेगा। मायावती ने 2007 में जिस स्थान से बहुजन वोटबैंक को एकजुट कर बहुमत की सरकार बनाई थी, उसी स्थान से अब फिर एक नए युग की शुरुआत करना चाहती हैं। तब उन्होंने 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' का नारा दिया था। इस बार क्या नया नारा और नया संदेश दिया जाएगा, इस पर सबकी निगाहें टिकी हैं। रैली की तैयारियों में बसपा कोई कसर नहीं छोड़ रही है। प्रदेश के हर जिले से भीड़ जुटाने की जिम्मेदारी अलग–अलग नेताओं को दी गई है। जिलाध्यक्षों को लक्ष्य सौंपा गया है कि वे अपने–अपने क्षेत्रों से समर्थकों को बसों, ट्रेनों और निजी वाहनों के माध्यम से 8 अक्टूबर की रात तक लखनऊ पहुंचाएं। रैली स्थल पर ठहरने, खाने–पीने और सुरक्षा की व्यवस्थाएं भी पूरी कर ली गई हैं। कांशीराम स्मारक स्थल, जिसकी क्षमता लगभग 5 लाख लोगों की है, को पार्टी नीले झंडों और I Love BSP जैसे पोस्टरों से पाट चुकी है। वहीं दूसरी ओर, लखनऊ नगर निगम और पुलिस प्रशासन भी रैली को लेकर सतर्क हो गया है। यातायात व्यवस्था से लेकर सुरक्षा घेरे तक सब कुछ चाक–चौबंद किया जा रहा है। स्थानीय प्रशासन को यह भली–भांति ज्ञात है कि इस रैली का असर राज्य की राजनीति पर पड़ेगा। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह रैली मायावती केलिए सिर्फ एक इवेंट नहीं, बल्कि उनकी राजनीतिक वापसी का ट्रेलर है। 2012 के बाद से बसपा सत्ता से बाहर रही है, और लोकसभा चुनावों में भी पार्टी का प्रदर्शन कमजोर रहा है। ऐसे में अब मायावती पार्टी की खोई हुई जमीन को फिर से पाने की दिशा में कदम बढ़ा रही हैं। मिशन 2027 मायावती के लिए सिर्फ सत्ता पाने का अवसर नहीं, बल्कि बसपा की विचारधारा को पुनर्स्थापित करने का माध्यम भी है। मायावती जानती हैं कि दलित वोटबैंक का एक बड़ा हिस्सा अब भाजपा और सपा की ओर आकर्षित हो चुका है। ऐसे में 'महासंकल्प रैली' के जरिए वह यह संदेश देना चाहती हैं कि बसपा अभी भी मैदान में है, और दलितों–पिछड़ों–अल्पसंख्यकों के हितों की असली संरक्षक वही हैं। रैली में सबसे दिलचस्प पहलू यह होगा कि मायावती के भतीजे आकाश आनंद की पार्टी में दोबारा सक्रिय भूमिका की घोषणा हो सकती है। बीते कुछ महीनों से उनके हाशिए पर रहने की अटकलें लगाई जा रही थीं। लेकिन अब संगठन की ओर से जो संकेत मिल रहे हैं, उससे स्पष्ट है कि युवाओं को जोड़ने के लिए पार्टी एक बार फिर आकाश को फ्रंटफुट पर लाना चाहती है।आकाश की उपस्थिति मायावती की सियासी सोच में बदलाव का प्रतीक मानी जा रही है। यह बदलाव न केवल नेतृत्व स्तर पर है, बल्कि संगठन की कार्यशैली में भी नयापन लाने की कोशिश है। मायावती इस रैली से दोहरा संदेश देना चाहती हैं पहला, अपने कोर वोटबैंक को फिर से संगठित करनाय और दूसरा, भाजपा व सपा जैसे दलों को यह बताना कि बसपा को अब नजर अंदाज करना भारी पड़ सकता है। भाजपा जहां हिंदू मतों के ध्रुवीकरण में व्यस्त है, वहीं सपा मुस्लिम–पिछड़ा दलित समीकरण पर काम कर रही है। ऐसे में मायावती की रणनीति है "सामाजिक न्याय, कानून व्यवस्था मजबूत नेतृत्व" को एक पैकेज के रूप में पेश करना। उनका फोकस खासकर जाटव, पासी, लोध, कुशवाहा, मौर्य, मुस्लिम और अन्य वंचित वर्गों को एक मंच पर लाने पर रहेगा। इससे बसपा न सिर्फ पारंपरिक वोटों को समेटेगी, बल्कि सपा और कांग्रेस की गैर–यादव पिछड़ा और गैर–जाटव दलित रणनीति को भी चुनौती देगी। इस रैली को लेकर न केवल प्रदेश, बल्कि राष्ट्रीय मीडिया की भी खास नजर है। टीवी चौनलों पर लाइव कवरेज की तैयारी हो चुकी है और सोशल मीडिया पर पहले से ही #BSPMahasankalpRally ट्रेंड करने लगा है। मायावती का भाषण इस रैली का केंद्रबिंदु होगा, जिसमें वह आने वाले महीनों के लिए पार्टी की नीति, संगठनात्मक बदलाव और राजनीतिक गठबंधनों पर अपने इरादे जाहिर कर सकती हैं। उत्तर प्रदेश की 403 विधानसभा सीटों में से अगर बसपा को 2027 में मजबूत प्रदर्शन करना है, तो उसे कम से कम 100 सीटों पर सीधी टक्कर देनी होगी। 2022 में पार्टी केवल 1 सीट जीत पाई थी, जो अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन था। ऐसे में इस रैली के जरिए कार्यकर्ताओं और समर्थकों में जोश भरना, संगठन को जीवंत करना और नए चेहरे पेश करना अनिवार्य हो गया है राजनीति के जानकार मानते हैं कि यदि बसपा इस रैली में भारी भीड़ लाने में सफल रहती है और मायावती स्पष्ट संदेश देती हैं, तो यह विपक्षी दलों की रणनीति को हिला सकता है। 'महासंकल्प रैली' सिर्फ एक शक्ति प्रदर्शन नहीं, बल्कि मायावती के लिए नई राजनीतिक पारी की शुरुआत है। यह दिखाने का समय है कि बसपा खत्म नहीं हुई, बल्कि अब और मजबूत होकर उभर रही है। कांशीराम की विरासत को लेकर चल रही इस राजनीतिक यात्रा में अब नया मोड़ आ गया है।अगर यह रैली सफल रही, तो मायावती और बसपा एक बार फिर उत्तर प्रदेश की राजनीति के केंद्र में लौट सकते हैं। और अगर नहीं, तो यह आखिरी मौका भी हो सकता है।

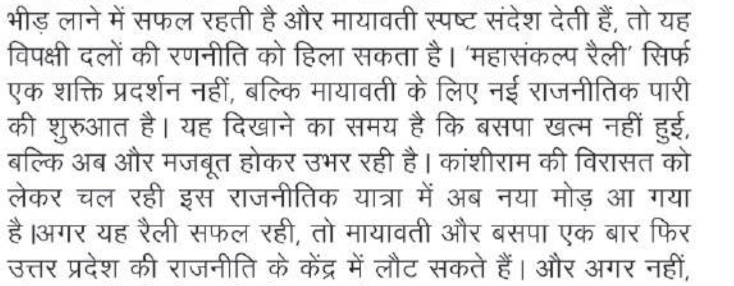

बेहद जरूरी और चेतावनी युक्त जानकारी

द वायरल | मंडला

यह साइबर फ्रॉड (ऑनलाइन धोखाधड़ी) का एक जाना–पहचाना तरीका है जिसमें अपराधी लोगों के WhatsApp अकाउंट को हैक करके उनके कॉन्टैक्ट्स को फिशिंग लिंक भेजते हैं।

यहाँ बचाव के उपाय दिए गए हैं–

साइबर फ्रॉड से बचाव के मुख्य उपाय

1. लिंक पर कभी क्लिक न करें

यदि आपको किसी परिचित या अज्ञात नंबर से कोई भी ऐप फाइल (APK) जिप फाइल, या कोई संदिग्ध लिंक मिलता है, तो उस पर तुरंत क्लिक न करें।

SBI बैंक, या किसी अन्य सरकारी / प्राइवेट संस्था के नाम पर भेजे गए किसी भी लिंक या फाइल पर बिल्कुल भरोसा न करें। बैंक कभी भी WhatsApp / SMS पर APK फाइल नहीं भेजते हैं।

2. परिचित से सीधे संपर्क करें

यदि आपको अपने परिचित के नंबर से कोई अजीब या संदिग्ध संदेश / लिंक मिलता है, तो WhatsApp पर जवाब न दें। उन्हें तुरंत कॉल करें या किसी अन्य माध्यम (जैसे SMS या किसी अन्य सोशल मीडिया) से संपर्क करके सत्यापित करें कि क्या उन्होंने ही वह लिंक भेजा है। यदि वे मना करते हैं, तो उन्हें बताएं कि उनका अकाउंट हैक हो गया है।

3. अज्ञात फाइलें डाउनलोड न करें

किसी भी अनजाने या असुरक्षित स्त्रोत से कोई भी ऐप फाइल (APK) या सॉफ्टवेयर अपने फोन में डाउनलोड या इंस्टॉल न करें। ये फाइलें मैलवेयर (हानिकारक सॉफ्टवेयर) हो सकती हैं जो आपके फोन का डेटा चुरा सकती हैं।

4. टू–स्टेप वेरिफिकेशन (Two & Step Verification) सक्रिय करें

अपने WhatsApp अकाउंट में टू–स्टेप वेरिफिकेशन (सेटिंग्स अकाउंट टू–स्टेप वेरिफिकेशन) हमेशा ऑन रखें। यह सुरक्षा की एक अतिरिक्त परत जोड़ता है और हैकर्स के लिए आपके अकाउंट तक पहुँचना बहुत कठिन बना देता है, भले ही उनके पास आपका वन–टाइम पासवर्ड (OTP) हो।

ऐसा कोई संदिग्ध संदेश आता है, तो उसकी जानकारी तुरंत साइबर सेल मंडला या निकटतम पुलिस स्टेशन को दें ताकि वे आवश्यक कार्यवाई कर सकें।

सावधान रहें और सुरक्षित रहें

साइबर सेल मंडला द्वारा जनहित में जारी

॥ प्रकाश पर्व दीपावली ॥

शुभ दीपावली

जगमग जगमग हैं दिन हुए,
जगमग हुई अंधियारी रात।
दीप पर्व पर मिली धरा को,
रोशनी की अद्भुत सौगात।

पूरनमासी सी लगने लगी,
अमावश की ये गहन रात।
उजियारे की अब जीत हुई,
गहन तिमिर की हुई मात।

घर घर सज गयी रंगोली,
उजला हुआ फिर परिवेश।
हर्ष और उल्लास से मिटे,
मानव के हैं सकल क्लेश।

गहन तिमिर से हैं जूझ रहे,
नन्हे नन्हे से दीपक आज।
रोशन कर सारे गगन को,
कर रहे भास्कर का काज।

दीप मालाओं का हार लिए,
लो आया दीपों का त्यौहार।
लाई, बताशा और मिठाई,
दे रहे हैं जन जन उपहार।

गणपति सरस्वती संग हुई,
लक्ष्मी माता हैं विराजमान।
विद्या अरु बुद्धि संग फिर,
बढ़ रहा है लक्ष्मी का मान।

शराब जुए के दुर्गुण तजने,
हम करें दृढ़ प्रतिज्ञा आज।
सुख समृद्धि औ लक्ष्मी का,
तभी होगा सच्चा आगाज।

यत्र तत्र औ सर्वत्र हो रहा,
फिर भाईचारे का व्यवहार।
मन की कलुषता हरने को,
आ गया दीपावली त्यौहार।

द वायरल | मण्डला : डॉ. संध्या शुक्ल ''मृदुल''

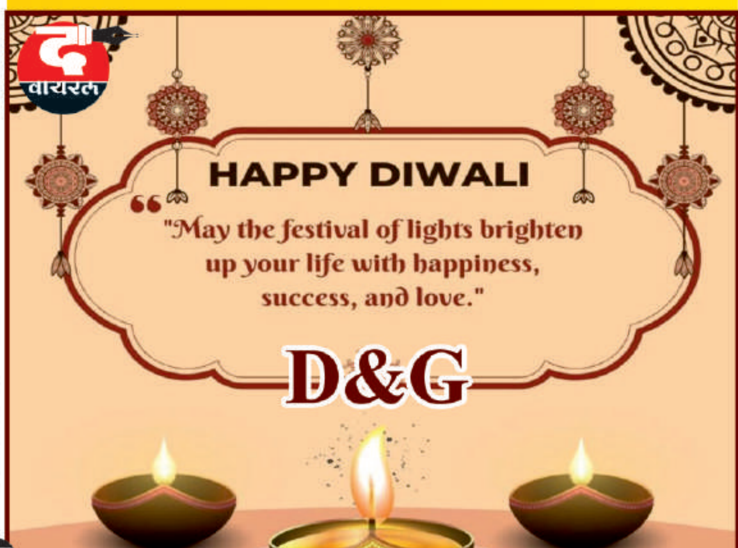

बिहार में शंकराचार्य का चुनावी शंखनाद 'गौ रक्षा' बनेगी सियासत का नया एजेंडा

अजयकुमार | द वायरल | लखनऊ (उ.प्र.)

बिहार की राजनीति में इस बार जातीय समीकरणों और विकास के वादों से अलग एक नया मुद्दा तेजी से उभरकर सामने आया है। ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने शिवहर से अपनी चुनावी मुहिम की शुरुआत करते हुए स्पष्ट ऐलान किया है कि वे राज्य की सभी 243 विधानसभा सीटों पर गौ भक्त प्रत्याशी मैदान में उतारेंगे। उनका कहना है कि सनातन धर्म की रक्षा तभी संभव है जब गौ माता की रक्षा हो और यही इस चुनाव की असली कसौटी होगी। उनके इस एलान के बाद बिहार की चुनावी राजनीति में हलचल मच गई है और हर दल इस नए समीकरण को लेकर गणित बैठाने में जुट गया है। शंकराचार्य ने शिवहर प्रवास के दौरान संवाददाताओं से कहा कि जो गौ माता की रक्षा की बात करेगा वही उनका साथी है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह व्यक्ति किस धर्म या समुदाय से है। अगर असदुद्दीन ओवैसी जैसे नेता भी गौ माता को माँ मानते हैं और उनकी रक्षा का संकल्प लेते हैं तो वे भी उनके सहयोगी हो सकते हैं। इस बयान ने पूरे राज्य में नई बहस छेड़ दी है क्योंकि यह पहली बार है जब किसी बड़े धार्मिक नेता ने सीधे तौर पर राजनीति में उतरकर एक ऐसा एजेंडा सामने रखा है जो पूरी तरह धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक भावनाओं पर आधारित है। शिवहर नगर परिषद ने हाल ही में गौ माता को नगर माता का दर्जा देने का प्रस्ताव पारित किया था। इस निर्णय ने शंकराचार्य की मुहिम को मजबूत आधार प्रदान किया। उन्होंने इस पहल को सराहते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि देश के हर नगर और हर पंचायत इस तरह का निर्णय लें। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे स्वयं को गौ मतदाता घोषित करें और केवल उन्हीं उम्मीदवारों को वोट दें जो गौ रक्षा पर स्पष्ट और दृढ़ रुख रखते हों। उनकी यह अपील अब गांव–गांव में चर्चा का विषय बनी हुई है। बिहार के ग्रामीण इलाकों में धार्मिक भावनाएँ हमेशा से गहरी जड़ें रखती हैं। खेती–किसानी करने वाला समाज गाय को केवल धार्मिक प्रतीक ही नहीं बल्कि अपनी आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन–रेखा मानता है। ऐसे में शंकराचार्य की यह मुहिम सीधे किसानों और ग्रामीण मतदाताओं के दिल तक पहुँच रही है। सीतामढ़ी के परौर गांव के किसान रघुनाथ ठाकुर कहते हैं कि पहले वोट देते समय जाति सबसे बड़ा आधार हुआ करती थी लेकिन अब शंकराचार्य जी ने हमें याद दिलाया है कि गाय हमारी असली पहचान है। विश्लेषकों का कहना है कि अगर यह मुहिम जमीनी स्तर पर असर दिखाती है तो कई सीटों पर नतीजे बदल सकते हैं। बिहार में विधानसभा चुनावों में पहले भी दो से तीन हजार वोटों का फर्क निर्णायक रहा है। 2020 के चुनाव में करीब 40 से अधिक सीटें बेहद मामूली अंतर से तय हुई थीं। ऐसे में अगर शंकराचार्य की मुहिम से 2 से 4 प्रतिशत वोट भी इधर–उधर होता है तो भाजपा समेत सभी दलों के लिए यह चुनौती बन सकता है। भाजपा के लिए यह स्थिति सबसे कठिन कही जा रही है। पार्टी वर्षों से हिंदुत्व और आस्था को लेकर राजनीति करती रही है। लेकिन शंकराचार्य ने सीधे तौर पर सवाल उठाया कि भाजपा ने अपने घोषणापत्र में अब तक गौ रक्षा को प्रमुख मुद्दा क्यों नहीं बनाया। उन्होंने कहा कि यदि भाजपा अब भी यह घोषणा कर दे कि वह गाय की रक्षा सुनिश्चित करेगी तो वे उनका समर्थन करेंगे, वरना जनता को यह मान लेना चाहिए कि भाजपा ने वादा निभाने में चूक की है। शंकराचार्य ने चेतावनी दी कि अगर भाजपा को नुकसान होगा तो वह उनकी करनी से होगा, न कि शंकराचार्य की तरफ से। राजद और

जदयू के लिए भी यह स्थिति आसान नहीं है। दोनों दल जातिगत समीकरणों के आधार पर चुनाव जीतने की कोशिश करते हैं, लेकिन धार्मिक भावनाओं के केंद्र में आने से उनका वोट बैंक भी प्रभावित हो सकता है। कांग्रेस और वामदलों ने इस मुहिम को चुनावी राजनीति में धर्म को घसीटने की कोशिश बताया है, लेकिन ग्रामीण इलाकों में उनकी बातों का उतना असर नहीं दिख रहा। गौ मतदाता संकल्प यात्रा इस समय उत्तर बिहार के दर्जनों गांवों में पहुँच चुकी है। यात्रा में शामिल लोग ढोल–नगाड़ों और भजन–कीर्तन के साथ प्रवेश करते हैं और फिर शंकराचार्य या उनके प्रतिनिधि प्रवचन देते हैं। प्रवचन का केंद्र बिंदु यही रहता है कि गौ माता हमारी संस्कृति की आत्मा हैं और उन्हें राष्ट्र माता का दर्जा दिलाना हर भारतीय का कर्तव्य है। स्थानीय स्तर पर इस यात्रा का माहौल धार्मिक मेले जैसा हो रहा है और बड़ी संख्या में महिलाएं, किसान और युवा इसमें हिस्सा ले रहे हैं। लेकिन शंकराचार्य की इस मुहिम के सामने चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। सबसे बड़ी चुनौती संगठनात्मक है। 243 सीटों पर उम्मीदवार खड़ा करना केवल घोषणा करना भर नहीं है, इसके लिए स्थानीय स्तर पर मजबूत नेटवर्क और संसाधनों की जरूरत होगी। यह भी सवाल है कि क्या उनके उम्मीदवार जनता तक अपना संदेश पहुँचा पाएंगे और क्या लोग केवल गौ रक्षा के आधार पर अपना वोट तय करेंगे। बिहार के मतदाता आस्था और धर्म से प्रभावित जरूर होते हैं, लेकिन बेरोजगारी, सड़क, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को भी नजरअंदाज नहीं करते। फिर भी यह तथ्य साफ है कि शंकराचार्य ने चुनावी विमर्श को नई दिशा दी है। अब तक बिहार की राजनीति जातीय गठजोड़ और विकास बनाम सामाजिक न्याय के मुद्दों के इर्द–गिर्द घूमती रही है। लेकिन अब गौ रक्षा और धार्मिक–सांस्कृतिक पहचान भी चर्चा के केंद्र में आ गई है। राजनीतिक दलों की चुप्पी बताती है कि वे इस नई लहर का इंतजार कर रहे हैं और देखना चाहते हैं कि जनता इस पर कैसे प्रतिक्रिया देती है। शिवहर, सीतामढ़ी, मधुबनी, चंपारण जैसे जिलों में जहां धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं गहरी हैं, वहां शंकराचार्य की अपील का असर सबसे पहले दिख सकता है। इन जिलों में पहले भी देखा गया है कि आस्था से जुड़े मुद्दों पर वोटिंग पैटर्न बदल जाता है। अगर यही स्थिति इस बार भी बनी तो चुनावी नतीजे अप्रत्याशित हो सकते हैं। फिलहाल इतना तय है कि शंकराचार्य का यह शंखनाद केवल एक धार्मिक आंदोलन नहीं बल्कि एक राजनीतिक प्रयोग भी है। यह प्रयोग सफल होगा या सीमित रह जाएगा, यह तो चुनावी नतीजे ही बताएंगे। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इसने मुख्यधारा की पार्टियों को सोचने पर मजबूर कर दिया है और बिहार की चुनावी राजनीति को नई दिशा दी है। आने वाले महीनों में यह सवाल गूंजता रहेगा कि इस बार बिहार में गाय और गौ माता का मुद्दा कितनी दूर तक जाएगा और क्या यह राज्य की सत्ता का रास्ता बदल देगा।

पवन-ज्योति विवाद से भाजपा की बिहार चुनावी रणनीति पर बड़ा संकट

संजय सक्सेना | द वायरल | लखनऊ (उ.प्र.)

सिनेमा के पावर स्टार और हाल ही में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए अभिनेता पवन सिंह एक बार फिर अपने निजी जीवन को लेकर सुर्खियों में हैं। लेकिन इस बार मामला सिर्फ पर्सनल नहीं रहा, इसका सीधा असर उनकी राजनीतिक छवि और भाजपा की आगामी बिहार विधानसभा चुनाव की रणनीति पर पड़ सकता है। पवन सिंह की दूसरी पत्नी ज्योति सिंह के साथ लंबे समय से तलाक का मामला अदालत में चल रहा है, लेकिन हाल ही में लखनऊ में हुए एक घटनाक्रम ने इस विवाद को नया मोड़ दे दिया है। अब यह विवाद सोशल मीडिया से लेकर राजनीतिक गलियारों तक चर्चा का विषय बन चुका है। जिस प्रकार से यह मुद्दा महिलाओं की अस्मिता, सम्मान और संवेदना से जुड़ता दिख रहा है, उससे बिहार की राजनीति में हलचल मच गई है। भाजपा के लिए यह स्थिति असहज बनती जा रही है, खासकर तब जब पार्टी पवन सिंह को दक्षिण बिहार में अपना लोकप्रिय चेहरा बनाकर 2025 के चुनावी मैदान में उतारने की तैयारी में है। लखनऊ में हुए ताजा घटनाक्रम की बात करें तो ज्योति सिंह सोशल मीडिया पर पहले ही यह घोषणा कर चुकी थीं कि वह अपने पति से मिलने लखनऊ जा रही हैं। उन्होंने लिखा था कि उन्हें उम्मीद है पवन सिंह उनसे जरूर मिलेंगे। लेकिन जब वह उनके घर पहुंचीं, तो वहां पुलिस पहले से मौजूद थी। न तो उन्हें घर में घुसने दिया गया और न ही पवन सिंह सामने आए। इस पूरी घटना का वीडियो खुद ज्योति सिंह ने रिकॉर्ड किया और उसे लाइव किया। वीडियो में ज्योति सिंह फूट-फूट कर रोती नजर आती हैं। वह कहती हैं कि अगर उन्हें पुलिस स्टेशन जाना पड़ा तो वह इसी घर में जान दे देंगी। यह बयान और उनका दुखड़ा सुनकर सोशल मीडिया पर लोग भावुक हो गए। वीडियो वायरल हुआ और ज्योति सिंह के समर्थन में हजारों कमेंट आने लगे। यह विवाद यहीं तक सीमित नहीं रहा। भोजपुरी सिनेमा के एक और बड़े नाम, खेसारी लाल यादव ने भी इस मुद्दे पर खुलकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि अगर भाभी ने कोई बड़ी गलती नहीं की है तो पवन सिंह को उन्हें माफ कर देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि वह भले ही उनकी बहन नहीं हैं, लेकिन एक बेटी हैं, और अगर उनकी अपनी बेटी के साथ ऐसा होता तो वह चुप नहीं बैठते। खेसारी लाल का यह बयान सिर्फ व्यक्तिगत संवेदना नहीं, बल्कि इसमें सामाजिक और राजनीतिक संकेत भी छिपे हैं। पवन सिंह और खेसारी लाल के बीच पहले से प्रतिस्पर्धा रही है, लेकिन अब यह प्रतिस्पर्धा केवल फिल्मी पर्दे तक सीमित नहीं रही, बल्कि सियासी रंग लेती नजर आ रही है। गौरतलब है कि ज्योति सिंह और पवन सिंह के बीच तलाक का मामला बिहार के आरा की फैमिली कोर्ट में चल रहा है। पवन सिंह की ओर से बयान दर्ज हो चुका है, वहीं ज्योति सिंह की गवाही अभी होनी बाकी है। अगली सुनवाई की तारीख 8 अक्टूबर तय की गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, ज्योति सिंह ने इस तलाक के बदले 5 करोड़ रुपये और एक घर की मांग की है। जबकि पवन सिंह बच्चों की पढ़ाई और खर्च उठाने को तैयार हैं, लेकिन दोनों के बीच सहमति नहीं बन पा रही है। इस बीच ज्योति सिंह ने यह भी कहा है कि अगर उन्हें इंसाफ नहीं मिला, तो वह राजनीति में उतरकर अपनी लड़ाई लड़ेंगी। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि वह आगामी चुनावों में निर्दलीय या किसी पार्टी के टिकट पर मैदान में उतर सकती हैं। यह बयान और परिस्थितियां भाजपा के लिए नई चिंता बन गई हैं। बिहार की राजनीति में महिला वोटर की भूमिका बेहद अहम होती जा रही है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार लंबे समय से महिलाओं के लिए योजनाएं चला रहे हैं और महिला सशक्तिकरण को अपना प्रमुख एजेंडा बना चुके हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी 2019 के लोकसभा चुनाव में महिला वोटर्स को भाजपा की साइलेंट स्ट्रेंथ बता चुके हैं। ऐसे में अगर यह विवाद और गहराया, और महिलाओं में ज्योति सिंह के प्रति सहानुभूति की लहर चल पड़ी, तो भाजपा को इसकी कीमत चुकानी पड़ सकती है। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने पवन सिंह को बंगाल की आसनसोल सीट से उम्मीदवार बनाया था। लेकिन जैसे ही पुराने गानों को लेकर विरोध शुरू हुआ, खासकर बंगाली महिलाओं के अपमान को लेकर, पवन सिंह को टिकट वापस लेना पड़ा। अब भाजपा उन्हें बिहार में नए चेहरे के रूप में पेश करने की तैयारी में थी, खासकर भोजपुर, रोहतास, और आसपास की सीटों पर। पवन सिंह की लोकप्रियता को देखते हुए पार्टी को उम्मीद थी कि वह युवाओं, खासकर पुरुष वोटरों को अपनी तरफ खींच सकेंगे। लेकिन अब यह विवाद उनकी छवि को सीधे तौर पर नुकसान पहुंचा रहा है। यह भी सच है कि राजनीति में छवि बहुत मायने रखती है। यदि कोई नेता या प्रत्याशी महिलाओं के प्रति अपमानजनक आचरण के आरोपों में घिर जाए, तो उसका सीधा असर पार्टी के पूरे चुनावी गणित पर पड़ता है। बिहार की राजनीति में इस समय सवर्ण मतदाताओं, खासकर ठाकुर समाज को साधने की कोशिश हो रही है। पवन सिंह ठाकुर समुदाय से आते हैं और भाजपा उन्हें इसी वर्ग का प्रभावी चेहरा बनाकर पेश करना चाहती थी। लेकिन अब यह पूरा समीकरण बिगड़ता नजर आ रहा है। अगर महिला वोटर्स नाराज हुईं तो न केवल पवन सिंह की सीट खतरे में पड़ेगी, बल्कि आसपास की सीटों पर भी असर देखा जा सकता है। पवन सिंह का विवाद पहले भी कई बार चर्चा में रहा है। लखनऊ के एक स्टेज शो के दौरान हरियाणवी डांसर अंजलि राघव के साथ अनुचित व्यवहार के कारण भी उन्हें आलोचना झेलनी पड़ी थी। बाद में उन्होंने माफी जरूर मांगी थी, लेकिन तब भी सवाल खड़े हुए थे कि क्या पवन सिंह महिलाओं के प्रति संवेदनशील हैं? अब पत्नी के साथ जिस तरह का व्यवहार सामने आया है, उससे यही धारणा मजबूत होती जा रही है कि उनके आचरण में गंभीर कमी है। इस पूरे मामले में भाजपा की स्थिति बेहद नाजुक बन गई है। पार्टी के पास अब दो ही रास्ते हैं या तो वह पवन सिंह को सार्वजनिक रूप से विवाद सुलझाने को कहे और डैमेज कंट्रोल करे, या फिर उन्हें बैकफुट पर डालकर कोई दूसरा चेहरा सामने लाए। राजनीतिक जानकार मानते हैं कि यदि भाजपा ने इस मुद्दे को हल्के में लिया, तो उसे आने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में नुकसान उठाना पड़ सकता है। ज्योति सिंह का यह कहना कि "यह सिर्फ मेरा अपमान नहीं, हर पत्नी और बहू का अपमान है", आम महिलाओं के दिल को छूने वाला बयान है। ऐसे बयानों का असर सोशल मीडिया से निकलकर जमीनी स्तर तक पहुंचता है, और वोटिंग में तब्दील होता है। भाजपा को यह समझना होगा कि यह विवाद जितनी जल्दी सुलझे, उतना बेहतर है। अन्यथा यह एक ऐसा मुद्दा बन सकता है, जो पार्टी की पूरी चुनावी रणनीति को झकझोर दे।

पड़ोसी देशों की अराजकता में भारतीय संविधान की ताकत का संदेश

अजयकुमार | द वायरल | लखनऊ (उ.प्र.)

"हमें अपने संविधान पर गर्व है पड़ोसी देशों को देखिए, वहां क्या हो रहा है।" सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बी. आर. गवई की यह टिप्पणी हाल ही में संविधान पीठ की सुनवाई में आई। यह वाक्य केवल एक कानूनी प्रक्रिया का हिस्सा नहीं था, बल्कि दक्षिण एशियाई लोकतंत्र की मौजूदा स्थिति पर गहन चिंतन और चेतावनी भी था। गवई ने नेपाल और बांग्लादेश का हवाला देकर बताया कि जब संवैधानिक संस्थाएं कमजोर होती हैं, जब जनता का भरोसा व्यवस्था से उठता है, तो लोकतंत्र भीड़तंत्र में बदल जाता है। भारत का संविधान आज इस मायने में सबसे बड़ी ढाल है कि उसने बार–बार हमें संकटों से निकालकर लोकतंत्र की नींव को मजबूत रखा। नेपाल का उदाहरण सबके सामने है। बीते दिनों वहां की सड़कों पर जिस तरह का आक्रोश देखने को मिला, उसने पूरे दक्षिण एशिया का ध्यान खींचा। सोशल मीडिया पर बैन लगाने के सरकार के फैसले ने आग में घी का काम किया। युवा वर्ग, जिसे 'जेन–जेड' कहा जा रहा है, अब केवल अभिव्यक्ति की आजादी के लिए नहीं बल्कि भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और राजनीतिक अस्थिरता के खिलाफ आवाज उठा रहा है। संसद भवन तक भीड़ का पहुंचना, सुप्रीम कोर्ट परिसर में तोड़फोड़ और नेताओं के घरों पर हमले यह साबित करते हैं कि जनता का धैर्य टूट चुका है। प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली और राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल को इस्तीफा देना पड़ा, लेकिन हिंसा थमी नहीं। सेना को कर्फ्यू लगाना पड़ा, फिर भी आंदोलन जारी है। नेपाल में यह अस्थिरता नई नहीं है। 2008 में जब राजशाही खत्म हुई, तो लगा था कि अब लोकतंत्र स्थिरता और विकास का रास्ता खोलेगा। लेकिन हकीकत उलट निकली। पिछले 17 वर्षों में वहां 14 सरकारें बदल चुकी हैं, कोई भी प्रधानमंत्री कार्यकाल पूरा नहीं कर सका। बार–बार राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के अधिकारों पर विवाद हुआ। सुप्रीम कोर्ट ने सरकारें गिराईं और बहाल कीं। संविधान, जो 2015 में लागू हुआ था, वह भी स्थिरता नहीं ला सका। परिणाम यह है कि जनता अब व्यवस्था से मोहभंग कर चुकी है और राजशाही की वापसी की मांग तक उठने लगी है। बांग्लादेश का परिदृश्य भी कुछ ऐसा ही है। हाल ही में प्रधानमंत्री शेख हसीना को सत्ता छोड़नी पड़ी और वे कुछ समय के लिए भारत में शरण लेने आईं। यह उस देश की त्रासदी है जिसने 1971 में पाकिस्तान से अलग होकर स्वतंत्रता पाई थी और लोकतांत्रिक भविष्य की उम्मीद जगाई थी। लेकिन वहां लगातार सत्ता संघर्ष, विपक्षी दलों के बीच अविश्वास और चुनावी प्रक्रिया पर सवालों ने संस्थाओं को खोखला बना दिया। जनता का भरोसा टूटने का नतीजा यही होता है कि लोकतंत्र केवल औपचारिकता रह जाता है और सड़क पर हिंसा ही असली राजनीति बन जाती है। इन हालातों की तुलना में भारत का लोकतंत्र और संविधान सबसे मजबूत उदाहरण बनकर सामने आता है। भारत ने भी संकटों का सामना किया है। 1975 का आपातकाल हमारे लोकतंत्र पर सबसे बड़ा हमला था। उस दौर में मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए गए, मीडिया पर सेंसरशिप लगी और विपक्षी नेता जेल में ठूंस दिए गए। लेकिन वही संविधान, वही लोकतांत्रिक चेतना और वही जनता थी जिसने 1977 में इंदिरा गांधी को सत्ता से बाहर कर दिया। और जब जनता ने देखा कि नई सरकार उनकी उम्मीदों पर खरी नहीं उतर रही, तो 1980 में उन्होंने इंदिरा को फिर से बहुमत से सत्ता में वापस ला दिया। यही संविधान की खूबसूरती है कि वह न केवल नेताओं को उनकी सीमा दिखाता है, बल्कि जनता को भी सही रास्ता चुनने की ताकत देता है। भारत की न्यायपालिका इस संविधान की सबसे बड़ी प्रहरी रही है। 1990 में मंडल कमीशन का मामला जब देशभर में हिंसा का कारण बना, तब सुप्रीम कोर्ट ने नौ जजों की पीठ बनाकर यह स्पष्ट किया कि आरक्षण पचास प्रतिशत से ज्यादा नहीं होगा और 'क्रीमी लेयर' को बाहर रखा जाएगा। इससे सामाजिक न्याय और समान अवसर का संतुलन बना रहा। 1992 में बाबरी मस्जिद ढहाए जाने के बाद देश दंगों की आग में झुलस रहा था, तब सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि धार्मिक आस्था भी संविधान से ऊपर नहीं हो सकती। 2019 में आया फैसला संवैधानिक मर्यादा में रहा और देश ने बिना बड़े दंगे के उसे स्वीकार किया। इसी तरह 2जी स्पेक्ट्रम और कोयला घोटाले के मामलों में सुप्रीम कोर्ट ने सरकार के फैसले रद्द कर दिए। यह संदेश गया कि राष्ट्रीय संपत्ति का गलत इस्तेमाल करने वाला कोई भी नेता कानून से ऊपर नहीं है। यही वह तंत्र है, जिसकी वजह से भारत में जनता का संविधान और न्यायपालिका पर भरोसा बना रहा, जबकि पड़ोसी देशों में यह भरोसा टूट गया। भारत का संघीय ढांचा भी इसकी सबसे बड़ी ताकत है। केंद्र और राज्यों के बीच सत्ता का संतुलन किसी एक को तानाशाह बनने से रोकता है। चुनाव आयोग की निष्पक्षता ने भी लोकतंत्र को सुरक्षित रखा। यही कारण है कि हर पांच साल में सत्ता बदलने का अधिकार जनता के हाथ में रहता है और कोई भी नेता खुद को अजेय मानने की गलती नहीं कर पाता। चीफ जस्टिस की टिप्पणी दरअसल हमें यही याद दिलाती है कि लोकतंत्र केवल सत्ता का खेल नहीं है, बल्कि यह जनता की ताकत का प्रतीक है। भारत ने हर संकट से संवैधानिक रास्ते से ही बाहर निकलने का सबक सीखा है। इमरजेंसी हो, मंडल हो, बाबरी मस्जिद का विवाद हो या घोटालों का दौर हर बार संविधान ने रास्ता दिखाया। नेपाल और बांग्लादेश के हालात भारत के लिए भी चेतावनी हैं। अगर कभी संस्थाओं की स्वतंत्रता कमजोर हुई या नेताओं ने जनता का भरोसा तोड़ा, तो हालात बिगड़ सकते हैं। लेकिन अब तक भारत ने संविधान को ही सबसे बड़ा हथियार बनाया है। यही वजह है कि जब पड़ोसी देश अराजकता और अस्थिरता में झुलस रहे हैं, भारत का लोकतंत्र और संविधान मजबूती का प्रतीक बनकर सामने आता है। नेपाल का 'जेन–जेड' आंदोलन बता रहा है कि नई पीढ़ी अब पुरानी राजनीति और पुराने तौर–तरीकों को स्वीकार नहीं करेगी। लेकिन हिंसा और आगजनी समाधान नहीं है। भारत का अनुभव यह कहता है कि परिवर्तन का रास्ता केवल संविधान और लोकतांत्रिक प्रक्रिया से ही निकलता है। जनता को अधिकार भी यही देता है और जिम्मेदारी का बोध भी यही कराता है। मुख्य न्यायाधीश गवई की टिप्पणी इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सिर्फ गर्व करने की बात नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए चेतावनी भी है। अगर हमने अपने संविधान और संस्थाओं की रक्षा नहीं की, तो हम भी उसी स्थिति में पहुंच सकते हैं, जहाँ आज नेपाल और बांग्लादेश खड़े हैं।भारत की उपलब्धि यही है कि संविधान को व्यवहार में उतारा गया है। यह किताब में बंद दस्तावेज नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है जिसने 75 वर्षों से देश को दिशा दी है। इसी संविधान ने हमें लोकतंत्र के अंधेरों से बार–बार रोशनी की ओर पहुँचाया है। यही वजह है कि भारत आज दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में गर्व से खड़ा है, जबकि पड़ोसी देशों की स्थिति हमें यह याद दिलाती है कि अगर संविधान कमजोर हो, तो लोकतंत्र केवल एक छलावा बन जाता है।

अब आपके समाचार सिर्फ पाँच मिनिट में...
"द वायरल"
दैनिक डिजिटल एडीशन
आपके समाचार, लेख, रचनाएँ एवं विज्ञापन
इस नम्बर पर भेजे- 9424917797

प्रधान सम्पादक : कपिल वर्मा
सम्पादक : राकेश झा
संकुलेशन इंचार्ज : राजेश जोशी
मुद्रक : आशीष सेठ

द वायरल

||शुभ दीपावली||

www.theviralpatrika.com

कार्यालय - चेम्बर 21, रेडक्रॉस भवन, मण्डला (म.प्र.) 481661, फोन नं. 9424917797

मध्य प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ
द्वितीय कार्य समिति 2025 की साधारण सभा एवं
जबलपुर संभागीय सम्मेलन
26 अक्टूबर को कान्हा में

शलभ भदौरिया
प्रदेश अध्यक्ष

मोहम्मद अली
प्रदेश संगठन प्रभारी

द वायरल

कपिल वर्मा | द वायरल | मंडला

मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ की द्वितीय कार्य समिति 2025 की साधारण सभा एवं जबलपुर संभागीय सम्मेलन का भव्य आयोजन 26 अक्टूबर 2025, रविवार को विश्वप्रसिद्ध कान्हा नेशनल पार्क स्थित किंगफिशर रिजॉर्ट में किया जा रहा है। प्रदेशभर से आ रहे पत्रकार साथियों की उपस्थिति में यह सम्मेलन संगठनात्मक सशक्तिकरण, आपसी समन्वय और पत्रकारों की समस्याओं पर सार्थक विमर्श के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बनने जा रहा है। यह आयोजन प्रातः 11 बजे प्रारंभ होगा और दो सत्रों में विभाजित रहेगा। प्रथम सत्र उद्घाटन सत्र के रूप में आयोजित होगा। द्वितीय सत्र में संगठनात्मक विषयों पर चर्चा की जाएगी। प्रथम सत्र के उपरांत भोजन की विशेष व्यवस्था रहेगी, जिससे सभी अतिथि और सहभागी आपसी संवाद और सौहार्द का अनुभव कर सकेंगे। कार्यक्रम का समापन शाम 4 बजे तक निर्धारित किया गया है, जिससे सभी प्रतिभागी समय पर अपने गंतव्यों की ओर प्रस्थान कर सकें। इस गरिमामयी सम्मेलन में प्रदेश के राजनीति और प्रशासन से जुड़ी कई प्रमुख हस्तियों को आमंत्रित किया गया है। इनमें विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर, उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल, प्रभारी मंत्री मंडला दिलीप जायसवाल, कैबिनेट मंत्री श्रीमती सम्पतिया उइके, सांसद मंडला लोकसभा फग्गन सिंह कुलस्ते, विधायक बिछिया नारायण सिंह पट्टा, विधायक निवास चैनसिंह बरकड़े , पुलिस अधीक्षक मंडला रजत सकलेचा तथा कलेक्टर मंडला सोमेश मिश्रा के नाम प्रमुख हैं। सम्मेलन की तैयारी और संचालन की जिम्मेदारी आयोजन समिति को सौंपी गई है। आयोजन समिति के अध्यक्ष सुभाष पांडे संभागीय महासचिव और सचिव अशफाक खान जिला अध्यक्ष मंडला, मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ हैं, जो इस ऐतिहासिक आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। यह सम्मेलन पत्रकारों के अधिकारों, कर्तव्यों और संगठनात्मक एकजुटता को लेकर एक अहम संवाद मंच सिद्ध होगा। साथ ही, यह आयोजन पत्रकारिता क्षेत्र में सहयोग और संवाद को नई दिशा देने का प्रयास है। यह कार्यक्रम निश्चित ही मध्यप्रदेश में पत्रकारिता जगत के लिए एक ऐतिहासिक पड़ाव साबित होगा।

अशफाक खान
जिलाध्यक्ष,मंडला
सचिव- आयोजन समिति

NEWS HIGHLIGHT

दिनांक: 26 अक्टूबर 2025, रविवार

समय: प्रातः 11 बजे से सायं 4 बजे तक

स्थान: किंगफिशर रिसॉर्ट, कान्हा जिला मंडला

सुभाष पाण्डेय
अध्यक्ष-आयोजन समिति

Since 1992
मधुरम परिवार की ओर से दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएँ...
Madhuram's
MANDLA
मधुरम
An Exclusive Shopee for
Sweets | Cakes | Cookies
Fast Food | Namkeen & Bakery
Madhuram Bakers & Packers
Binjhiya Tiraha, MANDLA
07642-254225
Madhuram Sweets
Bus Stand, MANDLA
07642-250925
HP GAS
एलपीजी सुरक्षा सुझाव
शुभ दीपावली
जी हाँ!
HP
GAS
your friendly gas
CHANGE BEFORE SEPT./25
सिर्फ सुरक्षा एलपीजी होज
का उपयोग करें और प्रत्येक
5 वर्ष में उसे बदल लें।
सुरक्षा एलपीजी नली 3 परत स्टील वायर
प्रबलित नली है जो विशेष रूप से घरेलू
एलपीजी संस्थापना के लिए डिजाइन की
गई है।
मण्डला गैस कम्पनी
07642- 252280
बस स्टेण्ड रोड, मण्डला

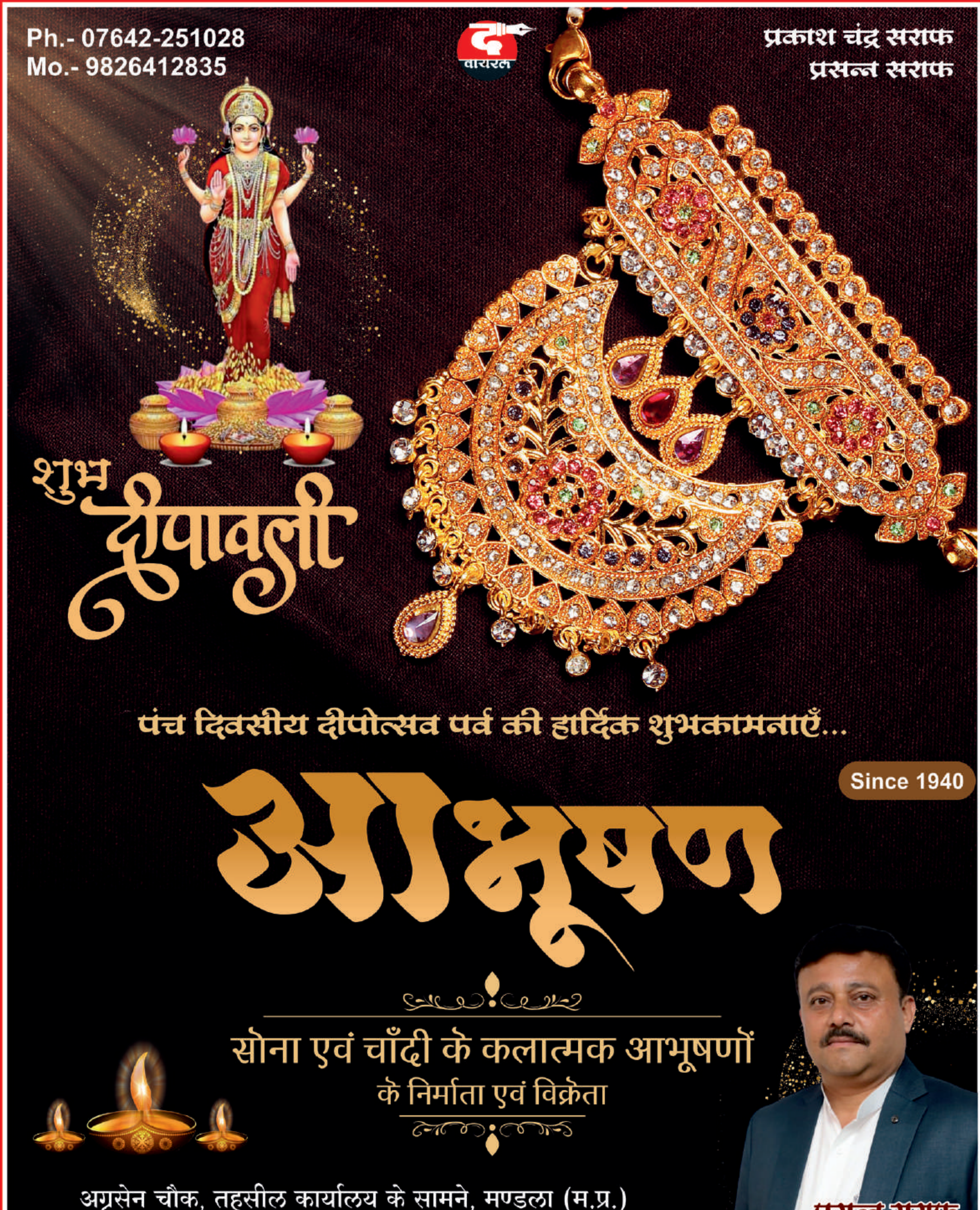

रजिस्ट्रेशन नं.: **RNI NO.: MPBIL/2021/86583** स्वामित्व एवं प्रकाशक : कपिल वर्मा द्वारा अवधकुटी, नाना घाट, आजाद वार्ड, मण्डला से प्रकाशित, आस्था प्रिंटर्स एवं स्टेशनर्स मण्डला द्वारा मुद्रित, सम्पादक : राकेश झा । समस्त विवादो का निपटारा जिला मण्डला म.प्र. न्यायालय के आधीन ।